श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार
जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन
C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, धर्मतीर्थ
पोस्ट-कचनेर (गट नं. 11-12), जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
www.jainacharyaguptinandiji.org
E-mail : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम : **श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह**

आशीर्वाद : **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव**

: **वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव**

रचनाकार : **मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी**
ग.आर्यिका राजश्री माताजी, ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी,
आर्यिका आस्थाश्री माताजी

सर्वाधिकार सुरक्षित : **रचनाकाराधीन**

प्रकाशन वर्ष : **2019**

संस्करण : **प्रथम 1000**

प्रकाशक : **श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)**
Email : dharamrajshree@gmail.com

प्राप्ति स्थान

1. **प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ**
2. **श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332**
3. **श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288**
4. **श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770**
5. **श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922**
6. **श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687**

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर**
9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

खण्ड- 1

क्र.सं.	भजन	रचयिता	पृष्ठ सं.
1.	श्री पंच परमेष्ठी आरती	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	6
2.	चौबीस भगवान की आरती	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	7
3.	आरती नं. 2	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	7
4.	चन्द्र शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री अरिहन्त परमेष्ठी की आरती	आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी	8
5.	आरती नं. 2	आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी	9
6.	रवि-मंगल ग्रहारिष्ट निवारक श्री सिद्ध परमेष्ठी की आरती	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	10
7.	आरती नं.-2	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	10
8.	गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री आचार्य परमेष्ठी की आरती	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	11
9.	बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री उपाध्याय परमेष्ठी की आरती	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	12
10.	शनि-राहु-केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री साधु परमेष्ठी की आरती	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	12
11.	धर्मतीर्थ पर आदिनाथ की आरती	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	13
12.	णमोकार मंत्र की आरती	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	14
13.	श्री आदिनाथ भगवान की आरती -1	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	15
14.	आरती नं.-2	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	16
15.	आरती नं.-3	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	16
16.	श्री पद्म प्रभु की आरती	आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी	17
17.	चंद्रप्रभुजी की आरती (1)	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	18
18.	आरती-2	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	18
19.	पुष्पदंत भगवान की आरती	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	19
20.	वासुपूज्य भगवान की आरती	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	20
21.	शान्तिनाथ भगवान की आरती -1	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	20
22.	आरती नं-2	आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी	21
23.	आरती नं. 3	मुनि श्री सुयशगुप्त जी	22
24.	आरती नं. 4	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	23
25.	आरती नं. 5	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	23
26.	आरती नं. 6	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	24
27.	आरती नं. 7	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	25
28.	आरती नं. 8	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	26
29.	आरती नं. 9	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	26
30.	आरती नं. 10	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	28
31.	आरती नं. 11	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	28
32.	आरती नं. 12	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	29
33.	श्री कुन्थुनाथ भगवान की आरती	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	30
34.	मुनिसुव्रत भगवान की आरती	आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी	31
35.	आरती नं.-2	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	31

क्र.सं.	भजन	रचयिता	पृष्ठ सं.
36.	नेमीनाथ की आरती	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	32
37.	आरती नं.-2	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	33
38.	पारसप्रभु की आरती -1	आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी	34
39.	आरती नं. 2	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	34
40.	आरती नं. 3	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	35
41.	आरती नं. 4	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	36
42.	आरती नं. 5	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	36
43.	आरती नं. 6 (चिंतामणि पार्श्वनाथ)	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	37
44.	आरती नं. 7 (कुन्थुगिरी पार्श्वनाथ)	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	38
45.	महावीर भगवान की आरती	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	38
46.	आरती नं. 2	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	39
47.	श्री सरस्वती माता की आरती नं. 1	मुनि श्री सुयशगुप्त जी	40
48.	आरती नं. 2	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	41
49.	आरती नं. 3	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	41
50.	आरती नं. 4	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	42
51.	गणधर प्रभु की आरती -1	आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी	43
52.	आरती नं.-2	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	44
53.	आरती नं.-3	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	45
54.	आरती नं.-4	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	45
55.	आरती नं.-5	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	46
56.	आरती नं.-6	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	46
57.	आरती नं.-7	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	47
58.	श्री बाहुबली स्वामी की आरती -1	मुनि श्री सुयशगुप्त जी	48
59.	आरती नं.-2	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	48
60.	आरती नं.-3	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	49
61.	आरती नं.-4	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	50
62.	पंचमेरु की आरती	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	50
63.	ऋषिमंडल यंत्र की आरती	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	51
	खण्ड-2		
64.	प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव की आरती -1	आचार्य गुप्तिनंदी जी	52
65.	आरती नं.-2	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	52
66.	आरती नं.-3	मुनिश्री सुयशगुप्त जी	53
67.	आरती नं.-4	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	54
68.	आचार्य श्री कनकनंदी की आरती नं.1	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	55
69.	आरती नं.-2	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	56
70.	आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी की आरती नं.1	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	57
71.	आरती नं.-2	मुनि श्री सुयशगुप्त जी	57
72.	आरती नं.-3	मुनि श्री सुयशगुप्त जी	58

क्र.सं.	भजन	रचयिता	पृष्ठ सं.
73.	आरती नं.-4	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	59
74.	आरती नं.-5	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	60
75.	आरती नं.-6	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	61
76.	आरती नं.-7	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	61
77.	आरती नं.-8	मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी	62
78.	आरती नं.-9	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	63
79.	आरती नं.-10	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	63
80.	आरती नं.-11	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	64
81.	आरती नं.-12	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	65
82.	आरती नं.-13	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	65
83.	आरती नं.-14	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	66
84.	आरती नं.-15	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	67
85.	आरती नं.-16	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	67
86.	आरती नं.-17	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	68
87.	आरती नं.-18	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	69
88.	आरती नं.-19	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	70
89.	आरती नं.-20	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	71
90.	आरती नं.-21	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	72
91.	आरती नं.-22	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	72
92.	आरती नं.-23	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	73
93.	आरती नं.-24	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	74
94.	आरती नं.-25	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	74
93.	आरती नं.-26	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	75
95.	आरती नं.-27	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	76
96.	आरती नं.-28	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	77
97.	आरती नं.-29	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	78
98.	आरती नं.-30	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	78
99.	वात्सल्य मूर्ति ग.आर्यिका राजश्री माताजी की आरती-1	ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी	80
100.	आरती नं.-2	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	81
101.	जिनशासन भक्त धरणेन्द्र देव की आरती	ग.आर्यिका राजश्री माताजी'अम्मु'	82
102.	श्री क्षेत्रपाल की आरती नं. 1	ब्र. कपिल भैय्या	82
103.	आरती नं.-2		83
104.	धर्मतीर्थ के यक्ष-यक्षिणी की आरती		84
105.	माँ पद्मावती की आरती नं. 1	ब्र. कपिल भैय्या	85
106.	आरती नं.-2	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	85

खण्ड–1

(1) श्री पंच परमेष्ठी आरती

ॐ जय केवलज्ञानी, हो स्वामी जय केवलज्ञानी।
आरती करते सब मिल, बन जायें ज्ञानी।। ॐ जय...

अतिशय चौंतीस के तुम धारी, हित उपदेशी महान्। हो स्वामी हित...
वीतराग अरिहंत प्रभुजी–2, छोडूँ मिथ्याज्ञान ।। ॐ जय...

अष्टकर्म से रहित जिनेश्वर, गुण अनंत धारी। हो स्वामी गुण...
ज्ञाता दृष्टा सिद्ध प्रभुजी–2, वर ली शिवनारी ।। ॐ जय...

रत्नत्रय के धारी गुरुवर, श्रमण संघ नायक। हो स्वामी श्रमण...
पंचाचारी ऋषिवर–2, हो मंगल दायक ।। ॐ जय...

मोह तिमिर को हरने वाले, मुनियों के पाठक। हो स्वामी मुनियों...
ज्ञान किरण विकसाते–2, बोधि ज्ञान दायक ।। ॐ जय...

मुनिव्रतों को धारण करके, करते आतम ध्यान। हो स्वामी करते...
सुर–नर–किन्नर ध्यावे–2, गाते तव यशगान ।। ॐ जय...

विषय विकार मिटावो भगवन्, शरण पड़ा तेरी। हो स्वामी शरण...
'राज' मुक्ति को पावे–2, छूटे भव फेरी ।। ॐ जय...

(2) चौबीस भगवान की आरती

(तर्ज – माइन–माइन...)

चौबीसों प्रभुवर की हम सब, आरती करने आये।
दीपों की थाली लेकर हम, झुमें नाचें गायें।।
बोलो चौबीस जिन की जय, बोलो तीर्थंकर की जय...

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म मन भायें।
श्री सुपार्श्व व चंद्र पुष्प जिन, शीतल मार्ग दिखाये॥
श्री श्रेयांस जिन वासुपूज्य जी-2, विमल प्रभु को ध्यायें॥1॥
दीपों.....

नाथ अनंत धर्म शांतिश्री, कुंथु अरह मल्लिश्वर।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व जी, अंतिम वीर जिनेश्वर॥
चौबीसों प्रभुवर की आरती-2, जग में शांति लाये॥2॥
दीपों.....

चौबीस थाली में हम चौबीस, दीप जलाकर लाये।
हर प्रभुवर का जाप करें हम, कर से ताल बजाये॥
'आस्था' से हम शीश झुकायें-2, जिन गुण संपत् पायें॥3॥
दीपों.....

आरती नं. 2

(तर्ज - धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले...)

आरती करलो प्रभुवर की, प्रभुवर की सब जिनवर की।
हम आरती करने आ रहे, चौबीसों प्रभु को ध्या रहे॥
आरती कर लो...

ऋषभ अजित संभव अभिनंदननाथ।
सुमति पद्म सुपार्श्व चंद्र का साथ॥
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस भगवान।
वासुपूज्य श्री विमल अनंत महान॥
भक्ति करें, मुक्ति वरें-2,
हम आरती... चौबीसों प्रभु ...॥1॥

धर्म शांति कुंथु अर मल्लिनाथ।
मुनिसुव्रत नमि नेमी व पारसनाथ॥
वीर सन्मति महावीर भगवान।
वृषभसेन से गौतम का गुणगान॥
जय-जय प्रभु, गणधर प्रभु-2,
हम आरती... चौबीसों प्रभु ...॥2॥

बाहुबली और जिनवाणी को ध्याय।
पुण्य खजाना निश्चित भरता जाय॥
प्रभु भक्ति से भक्त सदा सुख पाय।
हमको चौबीसो जिनवर मिल जाय॥
'आस्था' धरें, श्रद्धा करें-2,
हम आरती... चौबीसों प्रभु ...॥3॥

(3) चन्द्र शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री अरिहन्त परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : ॐ जय...)

ॐ जय अरिहन्त प्रभो, स्वामी जय अरिहन्त प्रभो।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर-2 हित उपदेशी विभो॥ ॐ जय अरिहन्त...

चार घातिया कर्म नशायें, गुण अनन्त पायें। स्वामी गुण...
धर्म सभा में राजे-2, अमृत बरसायें॥ ॐ जय अरिहन्त...

वसु मंगल द्रव्यों से पूजित, प्रातिहार्य भारी। स्वामी प्राति...
चौंसठ चँवर ढुराये-2, यक्ष मनोहारी॥ ॐ जय अरिहन्त...

तीर्थंकर चौबीस भरत के, बहुविध अर्हंता। स्वामी बहुविध...
उनकी वाणी झेले-2, गणधर गण नेता॥ ॐ जय अरिहन्त...

चन्द्र-शुक्र नवग्रह पीडाऐं, अर्हत् नाम हरे। स्वामी अर्हत्...
रोग शोक निर्धनता-2, अर्हत् भक्ति हरे॥ ॐ जय अरिहन्त...

जिसने तुम गुण गाया जिनवर, उसने सुख पाया। स्वामी उसने...
मुक्ति राजश्री पाने-2, 'गुप्तिनंदी' आया॥ ॐ जय अरिहन्त...

(4) चन्द्र शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री अरिहन्त परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : मिलो न तुम तो...)

अरिहन्तों के गुण हम गायें, मंगल दीप जलायें, करें हम आरती...
सुरभित घृत के दीप जलाकर, मंगल वाद्य बजायें। करें हम आरती...

तीन भुवन के स्वामी, त्रिभुवन को सुखकार हो,
त्रय काल ज्ञाता जिनवर, रत्नत्रय दातार हो,
छत्रत्रय सुर यक्ष लगायें, मंगल द्रव्य सजायें॥
करें हम आरती...

घाति कर्म के हर्ता, चतु संघ के आधार हैं,
छ्यालिस गुण के धारी, केवली श्रुत भंडार हैं,
ज्ञान ज्योति का दीप जलायें, मंगल नृत्य रचायें॥
करें हम आरती...

नवलब्धियों के धारी, नवग्रह दोष निवारते,
धर्म सभा में प्राणी, शुक्र-चन्द्र बाधा परिहारते,
'गुप्तिनंदी' त्रय गुप्ति पाने, मंगल भाव बनाये॥
करें हम आरती...

(5) रवि-मंगल ग्रहारिष्ट निवारक श्री सिद्ध परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : कभी राम बनके, कभी श्याम बनके...)

चंदा चांदनी दे, सूरज किरणें दे, करें सिद्ध प्रभु की हम आरती।

प्रभु आठों कर्म विनाशे, फिर सिद्ध शिला में राजे।
सब लोकालोक प्रकाशे, लोकाग्र क्षेत्र में राजे।।
जय-जय बोले, मेरा मन डोले, करें सिद्ध प्रभु की हम आरती।

समकित दर्शन गुण ज्ञानी, अगुरुलघु अव्याबाधी।
सूक्ष्मत्व वीर्य अवगाही, अक्षय अनंत गुण धारी।।
ज्योति चमके रे, घुंघरु छनके रे, करें सिद्ध प्रभु की हम आरती।

हम दीपमालिका लायें, निज आतमदीप जलायें।
सब सिद्धों के गुण गायें, रवि-मंगल दोष नशायें।।
त्रय गुप्ति वरें, शिवराज करें, 'चन्द्रगुप्त' करे है प्रभु आरती।

(6) रवि-मंगल ग्रहारिष्ट निवारक श्री सिद्ध परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : माईन-माईन...)

श्रीमत् परम विशुद्ध प्रभु की, आरती करने आये।
अजर अमर पदवी को पाने, सिद्धों के गुण गाये।। प्रभुवर ऽऽऽऽ...

कामशत्रु को हरने वाले, शुक्ल ध्यान के धारी।
घन घाति कर्मों को नाशे, बने शुद्ध अविकारी।।
अष्ट कर्म क्षय करके भगवन, गुण अनंत प्रगटायें।
अव्याबाध अचल अविनाशी, अगुरुलघु गुण पाये।। जिनवर ऽऽऽ...

शुद्ध बुद्ध लोकोत्तर स्वामी, लोकनाथ कहलाते।
विश्ववंद्य गुण नायक निर्मल, जिनशासन बतलाते॥
निष्कलंक निर्ग्रंथ निरंजन, जगत्प्रभु को ध्याये।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभुजी, विघ्न समूह नशाये॥ प्रभुवर ऽऽऽऽ...

सर्व ज्ञेय के ज्ञातादृष्टा, निज आतम में रमते।
रवि-मंगल ग्रह की बाधायें, सिद्ध जिनेश्वर हरते॥
देवों के जो देव कहाते, स्वयंबुद्ध कहलाये।
सिद्ध अनंतानंत प्रभु को 'आस्था' शीश झुकाये॥ जिनवर ऽऽऽ...

(7) गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री आचार्य परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : ना कजरे की...)

हम लाये दीपक थाल, गुरु सन्मुख हो नत भाल।
आचार्य मुनीश महान्, गुरु की आरती करते आज॥

गुरु पंच महाव्रत धारी, श्रुत ज्ञान निधि भंडारी।
व्रत संयम के दातारी, कहलाते पंचाचारी।
ये दयालु, हैं कृपालु-2, तोड़े कर्मों के जाल॥ हम लाये....

गंभीर हैं सागर जैसे, हित मित प्रिय वाणी कहते।
है सिंह समान पराक्रम, शिष्यों का पालन करते।
दीक्षा दाता, शिक्षा दाता-2, महिमा इनकी है विशाल॥ हम लाये....

आचार्य दर्श हम पायें, गुरु ग्रह का कष्ट मिटायें।
'राजश्री' शीश झुकायें, भव सागर से तिर जाये।
भक्ति गायें, मुक्ति पायें-2, गुरु सबके हैं प्रतिपाल॥ हम लाये....

(8) बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री उपाध्याय परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : प्यारा लागे...)

पाठक गुरु ऋषिराज, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ, गुरु चरण पखारूँ–2॥
हो बुध बाधा शांत.....

पच्चीस मूलगुणों के धारी, ऋषिवर पाठक ज्ञानी ध्यानी।
करदो भव से पार, आज थारी आरती उतारूँ ॥

पठन और पाठन करवाते, ज्ञानी का अज्ञान हटाते।
मिट जाये अज्ञान, आज थारी आरती उतारूँ ॥

ज्ञान किरण विकसाने वाले, निज स्वरूप को पाने वाले।
ज्ञान मूरति गुरुराज, आज थारी आरती उतारूँ ॥

समता रस का पान जो करते, निज में निज संग रमते रहते।
सौम्य शांत मनहार, आज थारी आरती उतारूँ ॥

'क्षमाश्री' गुरुवर गुण गाये, भक्ति भाव के पुष्प चढ़ाये।
हो गुरु प्राणाधार, आज थारी आरती उतारूँ ॥

(9) शनि-राहु-केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री साधु परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : स्याद्वाद के...)

ज्ञान ध्यान में रत गुरुओं को, वंदन करने आया हूँ।
जगमग दीपों की थाली ले, आरती करने आया हूँ॥

पंच महाव्रत धारण करते, पंच परावर्तन हरते। पंच-
निर्मल भावों के धारी को, सुर नर किन्नर सब नमते। सुर-
गमनागमन मिटाओ मेरा, कीर्तन करने आया हूँ 2।।
जगमग दीपों की थाली ले.....

चलते-फिरते तीर्थ गुरु का, दर्शन सब सुख का दाता। दर्शन-
मोक्ष मार्ग के पथ दर्शक का, नाम सुमर मन हर्षाता। नाम-
गुरु पद छाँव तले जीवन का, सुमन खिलाने आया हूँ 2।।
जगमग दीपों की थाली ले.....

धीर वीर गंभीर अचल बन, क्षमा धैर्य गुण को धारे। क्षमा-
वेष दिगम्बर धारण करके, वसु कर्मों को परिहारे। वसु-
व्रत संयम की शक्ति जगा दो, भक्ति करने आया हूँ 2।।
जगमग दीपों की थाली ले.....

गुरु आशीष हमें मिल जाये, ज्ञान सुधा रस पान करें। ज्ञान-
'राज' गुरु की शरणा पाके, पूरण निज अभियान करे। पूरण-
राहु-केतु-शनि सर्व ग्रहों की, बाधा हरने आया हूँ 2।।
जगमग दीपों की थाली ले.....

(10) धर्मतीर्थ के आदिनाथ की आरती

(तर्ज - पद्मावती माता...)

आदीश्वर बाबा, दर्शन की बलिहारियाँ।
वृषभेश्वर बाबा, दर्शन की बलिहारियाँ।। आदीश्वर बाबा....

1. धर्मतीर्थ पर आदिनाथ की, आरती करने आये।
   चम–चम करता घृत का दीपक, सबका मन हर्षाये।। वृषभेश्वर बाबा....

2. धर्मतीर्थ पे आदिनाथ जी, सबसे पहले आये।
   श्री आचार्य गुप्तिनंदी गुरू, ये तीरथ बनवाये।। वृषभेश्वर बाबा....

3. श्री कचनेर तीर्थ के पूरब, आदिनाथ बिठाये।
   जो भी इनकी शरणा आये, सुख–शांति पा जाये।। वृषभेश्वर बाबा....

4. ऋषभदेव प्रभु प्रथम जिनेशा, जीवन कला सिखायें।
   दुःख संकट में जिसने ध्याया, उसके कष्ट मिटायें।। वृषभेश्वर बाबा....

5. जिन मुनियों ने तुमको पूजा, अतिशय तब दिखलाया।
   वादिराज ने एकीभाव से, तन का कुष्ठ मिटाया।। वृषभेश्वर बाबा....

6. स्वामी मानतुंग सूरि को, बंध किया तालों में।
   भक्तामर स्तोत्र रचाया, छूटे मुनि तालों से।। वृषभेश्वर बाबा....

7. तीन लोक के स्वामी तुम हो, मैं हूँ भक्त तुम्हारा।
   'आस्थाश्री' चरणों में आये, देना प्रभु सहारा।। वृषभेश्वर बाबा....

(11) णमोकार मंत्र की आरती नं. 1

(तर्ज : माईन माईन.....)

जगमग दीपों की थाली ले, आरती करने आये।
महामंत्र नवकार शरण से, मुक्ति सुख पा जायें।।
बोलो महामंत्र की जय–2

पंच परम परमेष्ठी पद को, णमोकार से ध्यायें।
मंत्रराज के पद अक्षर को, सुमरण कर हर्षायें।
दु:ख-सुख संकट की घड़ियों में, मंत्र सुमरते जायें॥ महामंत्र...

चलते-फिरते सोते-उठते, इसी मंत्र को ध्याये।
मंत्र निधि की गुण गाथा से, अपने पाप नशाये।
सुख सागर की शुभ लहरों से, शीतलता पा जायें ॥ महामंत्र...

मोक्ष महल के अनुगामी को, महामंत्र से ध्याऊँ।
मोक्ष महल के पथ को पाने, जिन महिमा नित गाऊँ।
'राजश्री' भी मंत्र सुमरते, मोक्ष महल पा जायें ॥ महामंत्र...

(12) श्री आदिनाथ भगवान की आरती -1

घुंघरु छम छमा छम, छन नन नन नन बाजे रे बाजे रे।
आदिनाथ की आरती में सब सुर नर नाचे रे॥

नाभिराय के लाड़ले, मरुदेवी के लाल।
आये जग में आदिप्रभु, नाचे बाल गोपाल॥ घुंघरु...

तारण तरण जिनेश ने, पाया केवलज्ञान।
सबको सद् उपदेश दे, किया ज्ञान का दान ॥ घुंघरु...

जग उद्धारक आप हो, आदिनाथ भगवान।
करता आरती भाव से, पाऊँ सम्यक्ज्ञान ॥ घुंघरु...

'क्षमाश्री' भक्ति करें, कर जिनवर गुण गान।
कृपा यदि हो आपकी, पाऊँ मुक्ती थान ॥ घुंघरु...

आरती –2

(तर्ज : माईन माईन...)

प्रभुवर की जो आरती करता, उसका पुण्य है आया।
आदिनाथ की आरती, करके सम्यक भाव जगाया।।
प्रभुवर ओ ओ ओ जिनवर आ आ आ–2

आदिप्रभु की भक्ति करके, हम भी पुण्य कमायें।
बीच भंवर में नाव पड़ी है, इसको पार लगायें।
जिसने प्रभु को न पहिचाना, वो ही है पछताया।
माया के फंदे में फंसकर, भव का भ्रमण बढ़ाया।। प्रभुवर...

जिनवर ने ही इस जग में है, कृत युग था दिखलाया।
असि–मसि आदि की शिक्षा दे, जीना हमें सिखाया।
बहुकाल तक राज्य किया फिर, छोड़ी सारी माया।
धन–वैभव को नश्वर समझा, आतम ध्यान लगाया ।। प्रभुवर...

केवलज्ञानी बने प्रभुजी, सबने मंगल गाया।
समोशरण की रचना कर, देवों ने हर्ष मनाया।
अष्टापद से मोक्ष गये जिन, सारे कर्म नशा कर।
भक्ति करती आज 'क्षमाश्री' अपने भाव जगाकर।। प्रभुवर...

आरती–3

(तर्ज – जय गणेश जय गणेश देवा..)

आदिनाथ आदिनाथ, आदिनाथ देवा।
दीप धूप आरती ले, भक्त करें सेवा।।

मात मरुदेवी लाल, नाभिनंद देवा।
आरती की थाल लेके, भक्त करे सेवा।।

1. स्वर्ण रत्न दीप लेके, द्वार तेरे आये।
मोतियों की थाल में ये, दीप चमचमाये॥
नृत्य भक्ति करके पावे, सौख्य शांति मेवा। दीप धूप .....

2. नवरंगी लाख-लाख, दीप हम सजायें।
रत्नमयी रंगमयी, ज्योत हम जलायें॥
आरती में झूम रहे, सर्व देवी-देवा। दीप धूप .....

3. ज्ञान ज्योति पाने को ये, आरती तिहारी।
सर्व पाप ताप हरे, आरती तिहारी॥
'आस्था' को मोक्ष दीजे हे जिनेन्द्र देवा ! दीप धूप .....

(13) श्री पद्म प्रभु की आरती

(तर्ज : मैं तो भूल गई.....)

श्री पद्म प्रभु जिनराज, तेरी जय-जय करें।
लायें दीपों की -2 मंगल थाल, भक्ति से नृत्य करें॥

राजा धरण के राजदुलारे, मात सुसीमा के नयन सितारे।
कौशाम्बी-2 नगर मनहार, तेरी जय-जय करें।

पद्मप्रभु के दर्शन पायें, ढोल मंजीरा ले भक्ति रचायें।
करें भावों से-2 प्रभु गुणगान, तेरी जय जय करें।

प्रतिमा प्रभु की मैं तो निहारूँ, निरख-निरख मन अति हर्षाऊँ।
मन मंदिर में-2 आओ भगवान्, तेरी जय जय करें।

भक्ति भावों से आरती गायें, रवि आदि नवग्रह दोष नशायें।
'गुप्तिनंदी' का-2 करो उद्धार, तेरी जय जय करें॥

(14) चंद्रप्रभुजी की आरती (1)

(तर्ज : मैं तो आरती उतारूँ रे...)

मैं तो आरती उतारूँ रे, चंद्रप्रभु स्वामी की-2
जय-जय-जय चंद्रप्रभु जय-जय हो-2

माँ सुलक्षणा के लाल, प्रभुजी तुम प्यारे।
पिता महासेन के बाल, चंद्रप्रभु न्यारे॥ चंद्रप्रभु...
झूम-झूम भक्ति करे, इन्द्र सब नृत्य करे
गर्भ में आये रे- हो प्रभुजी गर्भ...2 मैं तो...॥

इन्द्रों ने जाना आज, प्रभु ने जन्म लिया।
मेरु पर्वत पर जाय, प्रभु का कलश किया ॥ प्रभु का...2
भक्ति करो गाओ आज, जम कर सजाओ साज
चन्द्रपुरी नगरी में... हो प्रभुजी चंद्रपुरी...2 मैं तो...॥

हे चंद्रप्रभु जिनराज, आये शरण तेरी।
तोड़ो मम मोह दीवार, छूटे भव फेरी॥ छूटे...2
आओ 'राज' दर्श करे, प्रभुवर की भक्ति करे-2
जीवन सुधारो रे... हो प्रभुजी जीवन...2 मैं तो...॥

आरती-2

(तर्ज : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

हे चंदा प्रभु भगवान, हमें दो ज्ञान।
दीप हम लायें, प्रभु ! आरती हम सब गायें॥

प्रभु महासेन के कुलदीपक, माँ सुलक्षणा के बालसुलभ।
प्रभु चंद्रपुरी के राजन् आप कहाये॥ प्रभु ! आरती....

हे नाथ ! आठवे तीर्थंकर, इस जग में अतिशय अति सुन्दर।
निरखत-निरखत मन फूला नहीं समाये।। प्रभु ! आरती....

प्रभु नाम आपका चंदा है, लांछन[1] भी चमचम चंदा है।
हम भी चंदा सम चम-चम दीप सजायें।। प्रभु ! आरती....

ना आधि-व्याधि-उपाधि हो, प्रभु चरणन् मरण समाधि हो।
हम इसी भाव से चरणन् शीश झुकायें।। प्रभु ! आरती....

हे प्रभु ! इतना अतिशय कर दो, वसु कर्म हमारे क्षय कर दो।
प्रभु ! 'चंद्रगुप्त' के चित्तचंद्र में छाये।। प्रभु ! आरती....

(15) पुष्पदंत भगवान की आरती

झीनी-झीनी उड़ी रे गुलाल चालो रे मंदरिया में..चालो रे मंदरिया में-2
जगमग दीप की थाल सजाओ, पुष्पदंत की आरती गाओ।
नश जाये अज्ञान ..... चालो रे...

काकंदी में जन्मे देवा, करें चरण की सुर-नर सेवा।
गायें प्रभु गुणगान ..... चालो रे...

मात-पिता भी हर्ष मनायें, हम चरणों में शीश झुकायें।
होवे जय-जयकार ..... चालो रे...

राजपाट है सब दु:खदायी, तप संयम ही है सुखदायी।
करते वन प्रस्थान ..... चालो रे...

पुष्पदंत पुष्पों से प्यारे, बन गये वो तो धर्म सितारे।
पाने सम्यक्ज्ञान ..... चालो रे...

'आस्था' के शुभ दीप जलायें, भक्ति के रंग में रंग जायें।
दे दो शिव सुखदान ..... चालो रे...

(16) वासुपूज्य भगवान की आरती

(तर्ज : जरा सामने तो...)

श्री वासुपूज्य जिनराजजी, संकटहारी गुणखान जी।
हम आरती करने आ रहे, जगमग दीपों को ला रहे।

बाल ब्रह्मचारी पद पाकर, जीवन धन्य बनाया था।
मात-पिता के कुल का दीपक, भविजन के मन भाया था।
देवों ने किया जयकार है, प्रभु सब जग के आधार हैं॥ हम...

स्वर्ण रजत दीपों की थाली, भक्ति भाव से लाये हैं।
स्व-पर प्रकाशी दीपक सम हम, भाव जगाने आये हैं।
आशीष मांगने आ रहे, प्रभु तेरे गुणों को गा रहे ॥ हम...

द्वादश तप को तपने वाले, द्वादशवें तीर्थंकर हो।
'राजश्री' पद पंकज पायें, तुम ही धर्म दिवाकर हो।
हम मंगल आरती गा रहे, शुभ मंगल वाद्य बजा रहे ॥ हम...

(17) शान्तिनाथ भगवान की आरती -1

(तर्ज : ना कजरे की धार...)

हम आए तेरे द्वार हे शान्तिनाथ भगवान।
करें वंदन बारम्बार प्रभु की आरती करते आज,
प्रभु की आरती करते आज। होऽऽ

हो विश्वसेन के प्यारे, ऐरा के राजदुलारे।
हस्तिनापुर में जन्मे, सब जन के तुम मनहारे।
नाचें-गाएँ, धूम मचाएँ-2 देवों ने किया जयकार॥ हम आए.....

दुनियाँ की देख दशा को, वैराग्य हृदय में धारा।
संयम पथ पर चलने को, त्यागा धन वैभव सारा।
प्रभु की वाणी, मोक्ष दानी–2 तेरी महिमा अगम अपार॥ हम आए.....

तुम तीर्थंकर पद धारी, हो कामदेव जयकारी।
प्रभु चक्रवर्ती पद धारी, छह खण्डों के अधिकारी।
'राज' आए, भक्ति गाए–2, तुम सुख के हो भण्डार॥ हम आए.....

आरती–2

(तर्ज : मैं तो आरती.....)

मैं तो आरती उतारूँ रे शान्तिनाथ स्वामी की
जय–जय–जय शान्तिप्रभु जय जय हो–2

षट् खण्ड विजेता आप, जग पर राज करें।
तुम मन्मथ मन को मार, संयम ताज वरें–संयम...2
कर्मचक्र मार के, धर्मचक्र धार के–2 तीर्थ बताया है।
ओ प्रभुजी तीर्थ बताया है– मैं तो आरती...

जिनवर तुम हो निष्पाप, मम अघ नाश करो।
मैं लाया दीपक थाल, ज्ञान प्रकाश करो–ज्ञान...2
भक्तिगीत गान से, बाँसुरी की तान से–2 प्रभु गुण गाऊँ रे
ओ मैं तो प्रभु गुण गाऊँ रे– मैं तो आरती...

हे शान्तिनाथ विश्वेश शान्ति सुख दाता।
तुम नाम जपूँ दिन रात वर लेने आता–वर...2
'गुप्ति' तीन को धरूँ, मुक्ति राज को वरूँ–2 तुमको ही ध्याऊँ रे
ओ प्रभुजी तुमको ही ध्याऊँ रे–मैं तो आरती...

आरती–3

(तर्ज : माईन माईन.....)

शान्तिप्रभु मम हृदय विराजो, शान्ति पाने आया।
स्वर्ण पात्र में रत्नदीप ले, आरती करने आया।।
प्रभुवर के चरणों में नमन–2

शान्तिप्रभु की आरती करके, मिथ्याभाव हटायें।
चंचल मन को प्रभु सन्मुख कर, सम्यक् भाव बनायें।
विश्वसेन के राजदुलारे, ऐरा माँ के जाये।
हस्तिनागपुर धन्य हुआ प्रभु, सब मिल मंगल गायें।।
प्रभुवर के चरणों में नमन–2

काम विजेता मन्मथ श्री जिन, छः खण्ड़ों के धारी।
संयम पथ पर चलकर उनने, छोड़ी माया सारी।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, धर्म तीर्थ दातारी।
तप कल्याण मनायें सुरपति, बने मुक्ति अधिकारी।।
प्रभुवर के चरणों में नमन–2

झांझर–ढपली–ढोल बजाकर, प्रभु की भक्ति गाऊँ।
भक्ति भाव से नृत्य रचाकर, अतिशय पुण्य कमाऊँ।।
प्रभु दर्शन से निज दर्शन का, अवसर शुभ है आया।
शान्तिनाथ के गुण गाने को, 'सुयश' शरण में आया।।
प्रभुवर के चरणों में नमन–2

आरती–4

(तर्ज : मेरा महावीर प्यारा.....)

ऐरा नन्दन दुलारा, मेरी आँखों का तारा।
तेरी आरती गायें, रत्नदीप जलायें।
जय हो शांतिनाथा, जय हो शांतिनाथा–2

सोने की थाली रत्नों की ज्योती।
जिसमें जड़े हैं हीरे और मोती।
रुम–झूम रुम–झूम भक्ति रचाये। ऐरा नन्दन दुलारा...

दीपों की माला हाथों में लेके।
ढोलक मंजीरा बाँसुरिया लेके।
ढपली की ताल पे नाच रहे हैं। ऐरा नन्दन दुलारा...

पंच कल्याणक से भूषित हो।
समोशरण में अति शोभित हो।
शांति संदेश शांतिनाथ कहे हैं। ऐरा नन्दन दुलारा...

जगमग दीपक हम सब लायें।
ज्ञान ज्योति की आश लगाये।
मुक्तिराज पाने 'चन्द्र' आय रह्यो है। ऐरा नन्दन दुलारा...

आरती– 5

(तर्ज : चन्दा तू लारे.....)

शान्तिप्रभु शान्तिकारी, शान्तिप्रभु जग हितकारी
हम सब उतारें तेरी आरती होऽऽ जिनवर,
झुक–झुक उतारें तेरी आरती.....।

विश्वसेन के लाडले जिन, ऐरा जननी जाये।2
नगर हस्तिनापुर में जन्मे, सब मिल मंगल गायें।2
घुँघरु की छम-छम बाजे, हम सब मिल आरती गायें।
हम सब उतारें तेरी आरती.....।

शान्तिप्रभु की आरती करने, जगमग दीपक लायें।2
केवलज्ञान की ज्योति जगेगी, आश हृदय भर लाये।2
ढोलक-मंजीरा बाजे, ढपली की ताल पे नाचें।।
हम सब उतारें तेरी आरती.....।

जगत्श्रेष्ठ जगबंधु प्रभुजी, जग के पालनहारे।2
हर क्षण तेरा नाम रटूँगा, सबके आप सहारे।2
भक्ति की शक्ति पाऊँ, मुक्तिपुरी को जाऊँ।।
हम सब उतारें तेरी आरती.....।

तीन पदों के धारी प्रभुजी, तीन बार शिरनाऊँ।2
तीन रत्न के गुण मैं गाकर, रत्नत्रय पा जाऊँ।2
'राजश्री' शरणा आये, शान्तिप्रभु के गुण गाये।।
हम सब उतारें तेरी आरती.....।

आरती -6

(तर्ज : धीरे-धीरे बोल.....)

शान्तिप्रभु शान्ति कर दो, सब जग में शान्ति कर दो-2
हम जगमग दीपक ला रहे, शान्तिप्रभु के गुण गा रहे।। शान्तिप्रभु.....

मात-पिता के मन में हर्ष अपार, जन्मे जिनसे जग के तारणहार।
गर्भ-जन्म का उत्सव मंगलकार, आरती करने आये सुरनर नार।
वीणा बजा, ढपली बजा-2, हम प्रभु की मुद्रा लख रहे।
दृष्टी सम्यक्त्व बना रहे।। शान्तिप्रभु...

शान्तिप्रभु ने छोड़ा घर परिवार, दीक्षा लेकर करने धर्म प्रचार।
समोशरण की महिमा अपरम्पार, दिव्य देशना खिरती है त्रय बार।
ढोलक बजा, झांझर बजा-2, हम दिव्य देशना पा रहे
और सम्यग्ज्ञानी बन रहे।। शान्तिप्रभु...

कामदेव चक्री तीर्थंकर नाथ, चरणों में हम झुका रहे हैं माथ।
'राजश्री' आयी चरणों में आज, पाने रत्नत्रय निधी का साम्राज्य।
घंटा बजा, घुंघरू बजा-2, सुख वैभव पाने आ रहे।
सम्यक् चारित्र को ध्या रहे।। शान्तिप्रभु...

आरती -7

(तर्ज : जन्म जन्म का.....)

शान्तिप्रभु गुण गाकर, पायें इनका सहारा-पायें...2।
आरती करने आये, पाने ज्ञान भण्डारा।।

विश्वसेन के प्यारे, ऐरा राज दुलारे।
हस्तिनागपुर जन्मे, हो त्रिभुवन मनहारे।
गर्भ-जन्म की महिमा गाता, भूमण्डल जग सारा।। शांति प्रभु.....

कामदेव चक्री हो, तीर्थंकर पद धारी।
धन-वैभव को छोडा, बन के ब्रह्म विहारी।
केवलज्ञानी की वाणी ने, किया जगत उद्धारा।। शांति प्रभु.....

मोक्षमार्ग के नेता, वीतराग हितकारी।
नाम जाप करते हैं, बनकर चरण पुजारी।
'क्षमा' राज शिवपुर का पाने, आये शान्ति द्वारा।। शांति प्रभु.....

आरती–8

(तर्ज : मेरा मन डोले.....)

जय–जय बोलो आरती कर लो जय शान्तिप्रभु की आज हो
हम करें सभी मिल आरतियाँ.....

विश्वसेन ऐरा नंदन का जग सारा दीवाना।
जन्म समय में धनपति लाया अपना स्वर्ग खजाना–प्रभुजी अपना..2।
त्रिपुरारी की, मनहारी की, ले रत्नदीप का थाल हो।
हम करें सभी मिल आरतियाँ.....

तीन पदों के धारी प्रभुजी तज वैभव हर्षायें।
विश्व विजयी केवलज्ञानी की यश गाथा हम गायें–प्रभुजी यश...2।
विश्वेश्वर की, चक्रेश्वर की, ले स्वर्णदीप का थाल हो।
हम करें सभी मिल आरतियाँ.....

ढोल–मंझीरा झांझर लेकर झूमें–नाचें–गायें।
'क्षमाश्री' तव चरणों की रज पाकर सुख पा जाये–प्रभुजी पाकर...2।
मदनारी की, सुखकारी की, ले रजत दीप का थाल हो।
हम करें सभी मिल आरतियाँ.....

आरती –9

(तर्ज : चिन्तामणी पारसनाथ की.....)

सोलवें प्रभु शान्तिनाथ की, करें आरती... करें आरती
शांतिप्रभु–शांतिप्रभु, जग हितकारी, चरणों में आये हम, बनके पुजारी
सोलवें प्रभु शान्तिनाथ की.....

1. विश्वसेन माँ ऐरा दुलारे, मात पिता की आँख के तारे।
रत्नवृष्टि लगती मनहारी, पन्द्रह महीने तक सुखकारी॥आ–आ–आ–आ–
आओ आरती गायें ..... जय हो
जगमग दीप जलायें ..... जय हो
भक्ति में रम जायें ..... जय हो
प्रभु कष्ट हरेंगे, बिगड़ी बनायें जिनराज ही–करें आरती–2.. शांतिप्रभु...

2. षट् खण्डों के अधिपति बनकर, शासन करते प्रभु जन मन पर।
तृण समान सब वैभव छोड़ा, तप संयम से नाता जोड़ा॥आ–आ–आ–आ
झूमें–नाचें–गायें ..... जय हो
मिथ्या तिमिर नशायें ..... जय हो
सम्यक् ज्योति जलायें ..... जय हो
स्वर्ण थाल सजायें, आरती उतारें शांतिनाथ की... करें आरती–2–शांतिप्रभु...

3. सुर–नर–पशु सब शरण में आये, समवशरण में शरणा पायें।
तव चरणों में वंदन करते, शांतिप्रभु सबके दुःख हरते॥आ–आ–आ–आ
जो भी इनको ध्याये ..... जय हो
भव सागर तिर जाये ..... जय हो
शांति सुख पा जाये ..... जय हो
जिन शरण में आये, भव से तिराये जिननाथ ही– करें आरती–2–शांतिप्रभु...

4. तीन लोक से पूजित जिनवर, ऊर्ध्वलोक के वासी प्रभुवर।
अक्षय अनुपम गुण भण्डारी, संकट मोचन हो त्रिपुरारी॥आ–आ–आ–आ
मिलकर पुण्य कमायें ..... जय हो
सारे पाप नशायें ..... जय हो
'आस्था' शरण में आये ..... जय हो
प्रभु पार लगाओ, चरणों में लेलो शांतिनाथजी... करें आरती–2–शांतिप्रभु...

आरती –10

(तर्ज : म्हारा हिवडा में नाचे.....)

हम आरती करते आज तत थइया–थइया,
भक्ति से बजाओ साज, ढोलक झांझरियाँ।
शान्तिनाथ है नाम तुम्हारा, पार लगादो नैया॥ हम आरती करते.....

प्रभु शांतिनाथ की आरती से, भव भव के दुःख मिट जाते हैं–2। ओऽऽ आ–2..
जो इनके चरण कमल पूजे, वे सुख निधि वैभव पाते हैं।।
दीप जलाकर, आरती गायें, बजा रहे बाँसुरियाँ॥ हम आरती करते.....

प्रभु गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष, पाँचों कल्याणक प्राप्त करे। होऽऽ आ–2..
पाँचों कल्याणक से भूषित, पाँचों परिवर्तन दूर करे।।
पंचम गति को पाने आये, पायें मुक्ति डगरियाँ॥ हम आरती करते.....

जो समवशरण में आता है, वो दान चार विधि पाता है। ओऽऽ आ–2...
क्षायिक दानी प्रभु की वाणी सुन, कृत्य कृत्य हो जाता है।।
शांतिदाता, कष्ट मिटाता, तुम्ही नाथ खिवैया॥ हम आरती करते.....

प्रभुवर की भक्ति सुखकारी, दुर्गति से हमें बचाती है। ओऽऽ आ–2...
'आस्थाश्री' प्रभु का भजन करे, वो शरण तिहारी आती है।।
वंदन करते, कीर्तन करते, जगमग थाल सजैया॥ हम आरती करते.....

आरती –11

(तर्ज : आया बाबा का त्यौहार, शिवरात्रि...)

सूरज–चाँद–सितारे जैसे, चमचम दीप जलाओ।
चम–चम दीप जलाओ भक्तों, छम–छम नृत्य रचाओ॥
आओ आओ रे आरतियाँ गाओ।
शांतिनाथजी की आरतियाँ गाओ।।

शांतिप्रभु की सुन्दर सलौनी, लागे मूरत प्यारी।
नैनों से उनके नैना मिलाके, जाऊँ मैं बलिहारी।।
घुँघरु की छम-छम के संग-संग, ढम-ढम ढोल बजाओ।
स्वर्णथाल में दीपमाल को, जय-जय बोल सजाओ।।
आओ आओ रे....

शांतिप्रभु से शांति मिले जो, और कहाँ मिल पाती।
दीपार्चना में जनता प्रभु की, जय-जयकार लगाती।।
लाख-लाख दीपों से प्रभु की, महाआरती गाओ।
शांतिनाथ मंदिर में भक्तों, दीपावली मनाओ।।
आओ आओ रे....

भक्तों के भगवन् शांति जिनेश्वर, जग के पालनहारे।
'चन्द्रगुप्त' की अँखियों के भगवन्, तुम हो चाँद सितारे।।
एक हाथ में वीणा लेकर, झन-झन तार बजाओ।
दूजे हाथ में खंजरिया ले, छम-छम नाचत गाओ।।
आओ आओ रे....

आरती -12 (अंजनगिरी के शान्तिनाथ)

(तर्ज : चला चला रे ड्राईवर...)

आओ-आओ रे प्रभु के द्वारे चले आओ। चले आओ..
अंजनगिरी के शान्तिनाथ की आरती गाओ।। आओ आओ रे..

जगमग दीपक थाल सजा हम-2, आरती करने आये।
शान्तिनाथ की आरती करके, सब संकट टल जायें।।1।। आओ आओ रे..

ऐरा माँ के राजदुलारे-2, विश्वसेन सुत प्यारे।
हस्तिनपुर में जन्म हुआ जब, आये सुरगण सारे।।2।। आओ आओ रे..

कामदेव की जन्म धरा पे–2, कामदेव प्रभु आयें।
चक्रवर्ती प्रभु कामदेव जी, सबका भाग्य जगायें॥3॥ आओ आओ रे..

सावलियाँ प्रभु शांतिनाथ जी–2, सबके मन को भाये।
अंजनगिरी में दर्शन पाने, भक्त दूर से आयें॥4॥ आओ आओ रे..

पर्वत माला बीच बसा है–2, क्षेत्र बड़ा मनहारी।
बने अनेकों भव्य जिनालय, प्राचीन है सुखकारी॥5॥ आओ आओ रे..

इस तीरथ को चमन बनाने–2, गुप्तिनंदी गुरु आयें।
खुले गगन में बिठा आपको, गुरुवर अति हर्षायें॥6॥ आओ आओ रे..

पूजें प्रातः सूर्य आपको–2, निशि में चाँद सितारे।
भक्त दूर से देख आपको, 'आस्था उर में धारे॥7॥ आओ आओ रे..

(18) श्री कुन्थुनाथ भगवान की आरती

(तर्ज : धीरे धीरे बोल कोई.....)

कुन्थुनाथ की जय बोलो, जय बोलो सब जय बोलो।
हम मंगल दीपक ला रहे, शुभ मंगल आरती गा रहे॥ कुन्थुनाथ की...

श्री कान्ता के राजदुलारे आप, सूरसेन के कुलदीपक निष्पाप।
हस्तिनागपुर के हो राजकुमार, प्रभु की बाल छवि लगती मनहार।
तबला बजा, भक्ति रचा–2, हम मंगल दीपक.....

तीर्थंकर मन्मथ चक्री भगवान, धन वैभव को छोड़ा नश्वर जान।
जिन दीक्षा ले करते निज कल्याण, दिव्य ध्वनि से करते जग कल्याण॥
दीपक जला, थाली सजा–2, हम मंगल दीपक...

केवलज्ञानी जिनवर कुन्थुनाथ, आरती करके झुका रहे है माथ।
'राजश्री' प्रभु गुण गाये त्रयकाल, जिन भक्ति से काटे कर्मन् जाल॥
वंदन करे, अर्चन करे–2, हम मंगल दीपक ला रहे...

(19) मुनिसुव्रत भगवान की आरती

(तर्ज : चंदा तू लारे.....)

भक्ति से थाली लेकर, घृत के शुभ दीप सजाकर।
मन से उतारे तेरी आरती,
रे बाबा झुक-झुक उतारे तेरी आरती।।

सुमित्र नृपजी के लाड़ले, और पद्मा जननी जाये-2
राजगृही में जन्म हुआ था, सब जग में सुख छाये-2
पद्मा माता के नन्दन, मुनिसुव्रत जगवंदन।। मन से...

रिश्ते-नाते छोड़े जिनवर, जग से मन घबराया-2
राग द्वेष सब छोड़ दिया और, आतम ध्यान लगाया-2
बने तुम केवलज्ञानी, तीर्थंकर आतम ध्यानी।। मन से...

सीता सती का कष्ट मिटाया, राम को पार लगाया-2
मानी दम्भी तार दिये सब, मुक्ति पथ बतलाया-2
'गुप्ति' हो तुम सम ज्ञानी, बने शुद्धातम ध्यानी।। मन से..

आरती नं. 2

(तर्ज : माईन-माईन....)

तीर्थंकर मुनिसुव्रत जिन की, आरती हम सब गायें।
जगदुःखहर्त्ता, सबसुखकर्त्ता, जिनवर को हम ध्यायें।।
बोलो मुनिसुव्रत की जय.....

राजगृही में जन्मे स्वामी, सोमा सुत मनहारे।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, मुनि बन सबको तारे।।

गिरी सम्मेद शिखर से भगवन–2, मोक्ष महल को पायें।
जगदुःखहर्त्ता..... बोलो मुनिसुव्रत.....।।1।।

जिन भक्तों ने मुनिसुव्रत को, अपने हृदय बसाया।
प्रभुवर ने भी उन भक्तों का, बेड़ा पार लगाया।।
हम भी भक्त तुम्हारे भगवन–2, द्वार तिहारे आये।
जगदुःखहर्त्ता..... बोलो मुनिसुव्रत.....।।2।।

मुनिसुव्रत के जिनमंदिर में, जगमग ज्योति जलती।
सब दुःख संकट की बाधायें, इस आरती से टलती।।
दीप जलाकर मंत्र जपें हम–2, फेरी नित्य लगायें।
जगदुःखहर्त्ता..... बोलो मुनिसुव्रत.....।।3।।

मुनिसुव्रत भगवन के तीरथ, सारे अतिशय वाले।
प्रभु चरणों की भक्ति करने, आते भक्त निराले।।
त्रय गुप्ति से तुम सम बनने–2, 'आस्था' शीश झुकाये।
जगदुःखहर्त्ता..... बोलो मुनिसुव्रत.....।।4।।.

(20) नेमीनाथ की आरती

(तर्ज : अपने पिया की.....)

जगमग दीपों की थाली लाई मैं सजाके।
आरती उतारूँ प्रभु नेमीनाथ की– हो नेमी...
रत्नदीप जलाके–2, जगमग.....

मात शिवा के राजदुलारे, समुद्रजय के लाल हैं।
नगर द्वारिका में प्रभु जन्मे, हर्षे बाल गोपाल हैं।
भक्ति से आरती गाये, नेमिनाथ की...रत्नदीप...

दीक्षा लेकर करी तपस्या, तीर्थंकर पद पाया है।
जो भी शरण में आया भगवन्, उसको पार लगाया है।
हम भी चरणों में आये, नेमीनाथ की...रत्नदीप...

झांझर ढोल मंजीरा लेकर, प्रभु की आरती गायेंगे।
झूमे नाचे प्रभु के द्वारे, गढ़ गिरनारी आयेंगे।
'आस्था' चरणों में आये, नेमीनाथ की... रत्नदीप...

आरती नं. 2

(तर्ज : माईन माईन...)

अष्ट धातु की मूरत प्यारी, नेमीनाथ भगवन की।
हम सब हर दिन करें आरती, बालयति भगवन् की॥
बोलो नेमीनाथ की जय, बोलो नेमीनाथ की जय...

मात शिवा के राजदुलारे, समुद्र जयसुत न्यारे।
राजुल राजकुमारी को तज, वेश दिगम्बर धारे॥
मानव ही क्या पशुओं पे भी-2, बरसी करुणा जिनकी।। हम सब...

धर्मतीर्थ में नेमीनाथ जिन, सबके मन को भाये।
श्री आचार्य गुप्तिनंदी गुरु, तुमको यहाँ बिठायें॥
धर्मतीर्थ में कृपा हुई है-2, नेमीनाथ भगवन् की॥ हम सब...

नित्य करें अभिषेक आपका नर-नारी भक्ति से।
करें आरती बाल वृद्धजन, नृत्य करें भक्ति से॥
'आस्था' से हम करें आरती-2, नेमीनाथ भगवन् की॥ हम सब...

(21) पारसप्रभु की आरती –1

(तर्ज : चंदा तू लारे.....)

आओ सब मिलकर आओ, पारस की आरती गाओ।
हम सब उतारें प्रभु की आरती, रे बाबा हम सब उतारें तेरी आरती॥

अश्वसेन वामा के नंदन, जन–जन के मनहारे–2
नगर बनारस में तुम जन्मे, देव खड़ा था द्वारे–2
इन्द्राणी भक्ति गाये, इन्द्र भी नाचे गायें ।। हम सब...

जन्म समय रत्नों की वर्षा, इन्द्र करे भक्ति से–2
सुन्दर नगर बनावे सुर गण, अवधिमय युक्ति से–2
प्रभु का जन्मोत्सव न्यारा, जन–जन का संकटहारा॥ हम सब...

तेरी आरती करके जिनवर, केवल दीप जलाऊँ–2
जगमग दीपों की थाली ले, आरती तेरी गाऊँ–2
'गुप्ति' तुम ध्यान लगायें, भव के बंधन कट जायें॥ हम सब...

आरती –2 (चिंतामणी पार्श्वनाथ की)

(तर्ज : धीरे–धीरे बोल.....)

पार्श्व प्रभु की जय बोलो, जय बोलो सब जय बोलो।
हम आरती करते प्रभु चरण, पारस प्रभु जग तारण तरण॥
पार्श्व प्रभु की जय बोलो.....

वामा माँ पितु अश्वसेन के लाल, काट दिये कर्मों के बंधन जाल।
साढ़े बारह कोटि बजे थे साज, प्रभु का मंगल उत्सव गायें आज॥
ढोलक बजा, झांझर बजा–2, हम आरती.....

चिंतामणी पारस प्रभु जग आधार, उनके चरणों में वंदन त्रय बार।
जलते नाग युगल को दे नवकार, किया प्रभु ने उन पर ये उपकार॥
माला जपूँ, संकट हरूँ-2, हम आरती...

कचनेर ग्राम के पारस की जयकार, रिद्धि-सिद्धि सुख समता के आधार।
कलिकुंड संकटहर पारसनाथ, चिंतामणी चिंता को हरते नाथ॥
थाली सजा, ताली बजा-2

'राजश्री' आयी प्रभु चरण, पारस प्रभु जग तारण-तरण।
पार्श्व प्रभु की जय बोलो, जय बोलो सब जय बोलो॥

आरती -3

(तर्ज : माईन माईन.....)

पार्श्वप्रभु की आरती करने, मन मेरा ललचाया।
जगमग दीपों की थाली ले, आरती करने आया॥ जिनवर के चरणों.....

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा माँ के प्यारे।
नगर बनारस में प्रभु जन्मे, जन-जन के मनहारे॥
जन्म समय रत्नों की वर्षा, दुःख दारिद्र नशाये।
गर्भ जन्म की महिमा गाने, हम सब मिलकर आये॥ प्रभुवर के चरणों.....

कमठ विजेता पार्श्व प्रभु की, भक्ति में रम जायें।
भक्ति की शक्ति को पाने, भक्त शरण में आये॥
चिंतामणी पारस प्रभुवर की, महिमा जग में न्यारी।
कलिकुंड पारस जिनवर ही, सब जन संकटहारी॥ प्रभुवर के चरणों.....

पँच महाउत्सव की भक्ति, भव परिवर्तन हरती।
कल्याणक पाँचों की शक्ति, मुक्ति रमा को वरती॥
मुक्ति मार्ग के हित उपदेशी, मुक्ति का वर दे दो।
'राजश्री' को हे पारस ! जिन, अपने रंग में रंग लो॥ जिनवर के चरणों.....

आरती –4

(तर्ज : ना कजरे की धार..)

हम लाये दीपक थाल, संकटमोचन प्रभु द्वार।
श्री पार्श्वनाथ भगवान, भक्ति नौका के आधार॥ भक्ति...sss

श्री अश्वसेन के प्यारे, माँ वामा राजदुलारे ।
काशी नगरी में जन्मे, जन–जन के नयन सितारे,
घुंघरु बाजे, घंटा बाजे–2, जन्मे जग तारणहार॥ हम लायें...

पारस प्रभु अन्तर्यामी, हम चरण कमल अनुगामी,
मन मंदिर में बस जाओ, त्रिभुवन के पारस स्वामी।
ढोल लायें, गीत गायें–2, दर्शन करते त्रयबार॥ हम लायें...

हम प्रभु दर्शन नित पायें, जगमग दीपों को लायें,
सब पाप तिमिर हट जाये, निज ज्ञान ज्योति प्रगटाये।
'राज' आये, भक्ति गाये–2, प्रभु कर दो बेड़ा पार॥ हम लायें...

आरती –5

(तर्ज : मन डोले मेरा तन.....)

प्रभु पारस की दु:ख हारक की ले मंगल दीप जलाय हो
हम आज उतारें आरतियाँ–2

हमने निज नयनों से देखी, मूरत आज अनोखी।
मोक्ष महल के जाने को, यह राह बताती चोखी। प्रभुजी राह–
फणिमण्डित की प्रतिबिम्बन् की, मनहर शुभ दीप जलाय हो॥ हम...

चिंतामणी पारस प्रभुवर की, मिलकर सब जय बोलो।
गान नृत्य से भक्ति बढ़ाकर, आज हृदय पट खोलो। प्रभुजी आज–
सब मिल करके गुण गा करके, हाथों में दीप अपार ले॥ हम...

पुण्य उदय से जन्म लिया है, उत्तम कुल में आकर। 'क्षमा' का मन अति हर्ष भरा है, तीन भुवन पति पाकर। प्रभुजी तीन-शिवगामी की जगनामी की, मणिमय घृत दीप प्रजाल हो।। हम...

चिंतामणि पार्श्वनाथ की आरती नं. 6

(तर्ज - मिलो ना तुम तो हम....)

हे धरणेश्वर, हे परमेश्वर, झुक-झुक शीश झुकायें।
करें हम आरती....
हे तीर्थेश्वर, हे परमेश्वर, चरणों में हम आये।।
करें हम आरती....

1. पद्मावती माँ ने, शीश बिठाया प्रभु आपको।
धरणेन्द्र यक्ष ने, छत्र लगाया प्रभु आपको।।
समता धारी पार्श्व जिनेशा, गुण तेरे नित गायें।।
करें हम आरती..

2. सात फणों से लेकर, सहस्र फणा है प्रभु आपपे।
पार्श्वनाथ प्रतिमा के, फण ही सरल पहचान है।।
पद्मावती धरणेन्द्र आपके, भक्त विशेष कहाये।।
करें हम आरती..

3. हर एक मंदिर में, प्रतिमायें होती पार्श्वनाथ की।
हर एक प्राणि के, मन में बसे हैं पार्श्वनाथ जी।।
जग-मग जग-मग ज्योति जलाये, 'आस्था' भी हर्षाये।।
करें हम आरती..

श्री कुन्थुगिरी पार्श्वनाथ की आरती नं. 7

(तर्ज – माईन–माईन....)

कुंथुगिरी के पारस बाबा, कलिकुण्ड सांवरियाँ।
चम–चम दीप जलाकर प्रभु की, गायें हम आरतियाँ॥

वामा माँ के गर्भ पली जब, पारस रूपी ज्योति।
तब अंबर से इस धरती पर, बरसे हीरे–मोती॥
देव–देवियाँ नृत्य रचायें, बजा ढ़ोल झाँझरियाँ। चम–चम...

पारस जन्में नगर बनारस, पौष वदी ग्यारस को।
दीक्षा ले मुनिराज बने प्रभु, पीने आतम रस को॥
हरने को उपसर्ग आपका, आई पद्मा मैया। चम–चम...

हे शिवगामी पारस प्रभु तुम, कुंथुगिरी में राजे।
आरतियाँ गा हम भक्तों का, मनवा झूमे नाचे।
पिहु–पिहु बोले मोर यहाँ और, कुह–कुह–कुह कोयलियाँ। चम–चम...

कुंथुसागर गुरु हमारे, ये तीरथ बनवाये।
जहाँ पार्श्व प्रभु से, सब कुछ बिन माँगे मिल जाये॥
'चंद्रगुप्त' पारस बाबा की, गाता है आरतियाँ॥ चम–चम...

(22) महावीर भगवान की आरती

(तर्ज : आरती श्री महावीर.....)

आरती श्री महावीर तुम्हारी, वर्द्धमान अतिवीर तुम्हारी–2।
कुण्डलपुर में जन्म तुम्हारा, सिद्धारथ घर हो उजियारा।
प्रियकारिणी नन्दन सुखकारी॥ आरती श्री...

धन्य हुआ वह दिन था प्यारा, भव्यों को जब मिला सहारा।
समोशरण की शोभा न्यारी।। आरती श्री...

पावापुरी से मोक्ष पधारे, सुर-नर अति हषार्यें सारे।
झूम-झूम के नाचे भारी।। आरती श्री...

हम सब शरण तुम्हारी आये, मन-वच-तन से शीश झुकायें।
'राजश्री' भी शरण तिहारी।। आरती श्री...

आरती-2

(तर्ज : मिलो न तुम तो हम.....)

वीर प्रभु के द्वारे आये, मंगल दीप सजायें। करें हम आरती-2
भक्ति भाव से आरती लाये, तन-मन धन्य बनायें।।
करें हम...

माँ त्रिशला को धन्य किया था तुमने विभू।
सिद्धारथ घर वाद्य बजाये तुमने प्रभु।
देव देवियाँ हर्ष मनाये, गीत प्रभु के गायें-।। करें हम...

मात-पिता को छोड़ा मुनि पद धारा निज ज्ञान से।
घाति करम का नाश किया है निज ध्यान से।
समोशरण की शोभा न्यारी, जन-मन संकटहारी।। करें हम...

जगमग दीपों की थाल सजाकर हम ला रहे।
मोहनी मूरत के दर्शन करने हम आ रहे।
'राजश्री' चरणों में आई, मोह तिमिर विनशाये।। करें हम...

(23) श्री सरस्वती माता की आरती नं. 1

ॐ जय जिनवाणी माँ मैय्या, जय जिनवाणी माँ
आरती करते सब मिल-2, पाने मुक्ति रमा॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

श्री जिनमुख से प्रकटी मैया, द्वादशांग वाणी।
सरस्वती श्रुतदेवी-2, माँ तुम ब्रह्माणी॥1॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

चार भुजायें तेरी मैय्या, बांटे सुख मेवा।
गणधर मुनि आर्याऐं-2, करते तव सेवा॥2॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

कर में अपने दीप लिये हम, नृत्य करें भारी।
सर्व अमंगल हरती-2, हो मंगलकारी॥3॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

जो तेरे गुण गाता देवी, वो शिव सुख पाता।
अल्पबुद्धि अज्ञानी-2, ज्ञानी बन जाता॥4॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

मंगल द्रव्य चढ़े तुम द्वारे, मंगल वाद्य बजे।
सोलह शृंगारों से-2, प्रतिमा रोज सजे॥5॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

शोध बोध कर बनें निरंजन, पूर्ण बोधि पायें।
श्रमण 'सुयश' भक्ति से, श्रुत-कीर्ति गाये॥6॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

आरती नं. 2

(तर्ज : जय-जय जगदंबे काली..)

मैया जिनवाणी प्यारी-प्यारी, जिनवर की वाणी प्यारी।
आरतियाँ गाऊँ तेरी भारती। हो मैया....

जन्मदायिनी माता से भी बड़ी शारदा माता। बड़ी...
जन्म दिया औरों ने पर तू जन्म सुधारे माता॥ जन्म...
माँ तुझको मात बनाऊँ, तेरा बेटा बन जाऊँ॥ आरतियाँ...

हंसवाहिनी मयूरवाहिनी ज्ञानदायिनी माता। ज्ञान...
तीर्थंकर मुखकमल वासिनी तीर्थंकर की माता॥ तीर्थंकर...
चम-चम-चम दीप जलाऊँ, छम-छम-छम नृत्य रचाऊँ॥ आरतियाँ...

मयूरवाहिनी तुझे देखकर मन मयूर नाचे हैं। मन...
सा रे गा मा प ध नी सा सातों सुर बाजे हैं॥ सातों...
ता थई-थई थैया-थैया, नाचूँ गाऊँ मैं मैया॥ आरतियाँ...

श्री विद्या प्राप्ति विधान से, मैया विद्या देना। मैया...
'चंद्रगुप्त' को गुप्तित्रय की, सुंदर विद्या देना॥ सुंदर...
मैया की छैया पाऊँ, भव की नैया तिर जाऊँ॥
आरतियाँ गाऊँ तेरी भारती हो मैया...

आरती नं. 3

(तर्ज- मेरा मन डोले....)

जय जिनवाणी, जग कल्याणी, हम करे आरती भारती
जय सरस्वती जग मैया की...

1. अर्हंतों के मुख से प्रगटी, द्वादशांग जिनवाणी
कर में वीणा हंसवाहिनी, तू जग की कल्याणी....2 ओ मैया तू...
ऋषि मुनि ध्याये, सुर नर गाये, तू ही माँ भव से तारती
जय सरस्वती....

2. वरद हस्त हम सबके सिर रख, वरदा माँ वरदानी।
लाल तेरा अज्ञानी हूँ मैं, मुझे बनादो ज्ञानी....2 ओ मैया मुझे....
सरगम बाजे, झूमे नाचे, तू दुःख से हमें उबारती
जय सरस्वती....

3. मुख पे मेरे नाम सदा हो, सरस्वती माँ तेरा।
वाणी माँ ऐसी वाणी दो, काटूँ भव का फेरा....2 ओ मैया काटूँ....
गुप्तिसूरी, काटे दूरी, 'आस्था' भी उर में धारती....
जय सरस्वती....

आरती नं. 4

(तर्ज : तुम दिल की धड़कन हो...)

माँ अम्बे जिनवाणी, श्रुतदेवी तुमको नमन।
आरती हम करते हैं, पाने को ज्ञान रतन।
रत्नों की थाल सजा, करती माँ तेरा भजन
माँ अम्बे जिनवाणी.....

वाग्वादिनी हे माता !, मोह तिमिर हरने वाली।
शारदे माँ शक्ति दो, लाऊँ दीपों की थाली।।
वीणा पाणी नाम तेरा, हंसवाहिनी कमलासन।
भक्ति के भाव लिये, पाप करम का करूँ वमन।।
माँ अम्बे जिनवाणी.....

भाग्य विधाता भव्यों की, श्री जिनवर मुख से खिरती।
द्वादशांग बहु भाषिणी, सप्त भंग वर्णन करती।।
ज्ञान सुधा पाकर माँ, राग-द्वेष का करूँ दमन।
सम्यक् दीप जलाने को, शत शत बार करूँ वंदन।।
माँ अम्बे जिनवाणी.....

झांझर घुंघरु वीणा ले, मंगल वाद्य बजायेंगे।
सरस्वती जगजननी से, विद्या का वर पायेंगे।।
विद्या दो हे माता !, प्रज्ञा बुद्धि ज्ञान सुमन।
'आस्था' को मुक्ति मिले, सम्यक पथ पे होवे गमन।।
माँ अम्बे जिनवाणी.....

(24) गणधर प्रभु की आरती -1

(तर्ज : स्याद्वाद के.....)

स्वर्ण रजत घृत रत्न दीप ले आरती करने आये हैं।
ऋद्धी सिद्धीधारी गणधर की भक्ति रचाने आये हैं।।

पंचकल्याणक से भूषित जिन, तीर्थंकर कहलाते हैं। तीर्थंकर-
सात शतक अठरह भाषा में, मुक्ति मार्ग बतलाते हैं। मुक्ति-
जिनवर की वाणी जो झेले, वे गणधर कहलाये हैं-2।।
ऋद्धी सिद्धीधारी गणधर.....

तीर्थंकर के प्रमुख शिष्य तुम, चौसठ ऋद्धि के धारी। चौसठ-
जिन आराधक निस्पृह साधक, मुक्ति रमा के अधिकारी। मुक्ति-
द्वादश धर्म सभा के नायक, गणनायक कहलाये हैं-2।।
ऋद्धि सिद्धीधारी गणधर.....

वृषभ सेन गुरु आद्य गणेश्वर, अंतिम गौतम गणधर हैं। अंतिम–
चौबीस तीर्थंकर के गणधर, कुल चौदह सौ बावन हैं। कुल–
विघ्न विनायक मंगलदायक, मंगल मूर्ति कहाये हैं–2।।
ऋद्धी सिद्धीधारी गणधर.....

जिसने तुमको ध्याया गुरुवर, उसने तुम गुण गाया है। उसने–
सर्व पाप दु:खभय भंजन कर, सर्व सुखों को पाया है। सर्व–
'गुप्तिनंदी' भी मुक्तिराज का, राज समझने आये हैं–2।।
ऋद्धी सिद्धीधारी गणधर....

आरती –2

(तर्ज : अपने पिया की.....)

कंचन थाली ले रत्न दीप जलाऊँ।
चौदह सौ बावन गणधर पावन धाम की होऽऽ पावन।
मैं तो आरती उतारूँ...।

समोशरण में आन विराजे, तीर्थंकर के पाद में,
दिव्य ध्वनि को झेले गुरुवर, गणधर पद को धारने।
ज्योति जलायें जगमग–जगमग थाल ले–हो जगमग।। मैं तो आरती...

विघ्न विनाशी ज्ञान प्रकाशी, रत्नत्रय भंडार हैं।
मुनियों के गणनायक तेरी, महिमा अपरम्पार है।
भक्ति के घुंघरु बाजे, छम छम ताल पे–हो छम ।। मैं तो आरती.....

चौसठ ऋद्धि धारी भगवन्, व्रत संयम वरदान दो।
चरणों के ये फूल 'चन्द्र' को, सम्यक् चारित्र दान दो।
मुक्ति का राज वरूँ मैं, ऐसी आस ले–हो ऐसी ।। मैं तो आरती...

आरती –3 *(तर्ज : नागिन.....)*

जय–जय बोलो आरती करलो जय गणधर प्रभु की आज रे,
हम करें सभी मिल आरतिया।

श्री अरिहंत परम सुखदाई, लोकालोक प्रकाशे।
मध्य लोक में आप विराजे, कर्म घातिया नाशे। प्रभुजी कर्म...
वंदन कर लो, कीर्तन कर लो, ले ताल मंजीरा हाथ रे॥ हम करे...

वृषभसेन को आदि लेकर, गौतम गणधर ज्ञानी।
द्वादश अंग निरुपण करते, परम भेद विज्ञानी। प्रभुजी परम...
भक्ति कर लो, स्तुति कर लो, ले वीणा मृदंग को हाथ रे॥ हम करे..

जिनवर गणधर की आरती से, ज्ञान की ज्योति जलायें।
'राजश्री' चरणों में आकर, मोह तिमिर विनशायें। प्रभुजी मोह...
अचर्न कर लो, पूजन कर लो, ले झांझर ढोल विशाल रे॥ हम करे...

आरती –4 *(तर्ज : भाया कई जमानो...)*

घुंघरु छम छमा छम छन नन नन नन बाजे रे। बाजे रे...
गणधर गुरु की आरती में मेरा मनवा नाचे रे॥

चौदह सौ बावन गणधर जी मुनियों के गणधारी।
समोशरण में प्रभु संग शोभे गणाधीश सुखकारी॥ घुंघरु...

तीर्थंकर की दिव्यदेशना, गणधर प्रभु जी झेले।
कर्म विजेता बनने को ये, अष्ट कर्म से खेले॥ घुंघरु...

मनहारी प्रभु की मुद्रा लख, भाव विराग बनाऊँ।
व्रत संयम की शक्ति जगाने, गुरु शरण अपनाऊँ॥ घुंघरु...

गान नृत्य संग दीप थाल ले, प्रभु की आरती गायें।
'क्षमा' धर्म के धारी गुरु को, हम सब शीश झुकायें॥ घुंघरु...

आरती –5

(तर्ज : प्यारा लागे छे गुरुराज...)

श्री गणधर गुरुराज, आज थारी आरती ऊतारूँ।
तीर्थंकर गणनाथ, आज थारी.....॥

चौसठ ऋद्धि के हो स्वामी, दिव्यध्वनि झेले गुरु ज्ञानी।
विघ्न विनाशक नाथ, आज थारी.....॥

मुक्ति के सोपान हैं जिनवर, ऋद्धि सिद्धि दाता गुरुवर।
जोड़ूँ दोनों हाथ, आज थारी.....॥

तीर्थंकर के लघुनंदन का, वंदन पूजन करलो इनका।
हे गण के अधिनाथ, आज थारी.....॥

भूमंडल में मंगल करते, पाप ताप दु:ख संकट हरते।
हो गुरु दीनानाथ, आज थारी.....॥

ज्ञान सुधा का पान कराया, जिनवाणी का मान बढ़ाया।
भक्ति भाव के साथ, आज थारी.....॥

गणाधीश गणपति गणनायक, श्री गणेन्द्र ही सिद्धिदायक॥
'आस्था' झुकाये माथ, आज थारी.....॥

आरती –6

(तर्ज : तेरा साथ है कितना प्यारा.....)

श्री गणधर के द्वारे आये, मंगल दीप जलाकर लाये।
आरती करने आये, हम दर पे तुम्हारे, प्रभु शीश झुकायें॥ श्री गणधर...

ऋद्धि सिद्धि के धनी, मुनियों के हो ईश,
दिव्य देशना झेलते, तुम्हें नमावें शीश।

ज्ञान निधि ये, तुमसे मिली है–2, ढोल मंजीरा बजायें॥
हम दर पे तुम्हारे, प्रभु शीश झुकायें॥ श्री गणधर...

भव्यों की शंका हरे, द्वादश अंग रचे प्रभु,
ज्ञान किरण प्रभु आपने, फैलाई जग में विभु।
गुरु भक्ति ही, देती मुक्ति–2, झूमें नाचे गायें॥
हम दर पे तुम्हारे, प्रभु शीश झुकायें॥ श्री गणधर...

वृषभसेन को आदि ले, गौतम गुरु ऋषिराज,
समोशरण में शोभते, मुनियों के सरताज।
गणधर प्रभु की, रजकण पाने–2, 'आस्था' शीश झुकायें॥
हम दर पे तुम्हारे, प्रभु शीश झुकायें॥ श्री गणधर...

आरती – 7

(तर्ज – माईन माईन....)

हे गणनायक हे गणस्वामी, चौंसठ ऋद्धिधारी।
चौदह सौ बावन गणधर की, आरती मंगलकारी॥
बोलो गणधर प्रभु की जय...2

धर्म तीर्थ में गणधर प्रभु की, सुन्दर जिन प्रतिमायें।
नाना रंगों वाली प्रतिमा, रत्नमयी मन भायें॥
ऋद्धि–सिद्धि गणधर स्वामी–2, आरती करें तुम्हारी। चौदह सौ.... ॥1॥

विघ्नों का परिहार करें प्रभु, मंगलमूर्ति कहाते।
जिनवर की वाणी जन–जन तक, गणधर प्रभु फैलाते॥
गणधर बिन प्रभु वाणी मिलती–2, इनकी शक्ति भारी॥ चौदह सौ.... ॥2॥

जो भक्ति से करे आरती, दुःख संकट मिट जाये।
ज्ञान रश्मियाँ पाने प्रभु से, आरती निशदिन गायें॥
'आस्था' कहती है सब गणधर–2, सर्व दोष परिहारी। चौदह सौ.... ॥3॥

(25) श्री बाहुबली स्वामी की आरती –1

झीनी–झीनी उड़ी रे गुलाल चालो रे मंदरिया में।
विंध्यगिरी है मनहार चालो रे मंदरिया में।।
मात सुनंदा राजदुलारे, ऋषभदेव के नयन सितारे।
बाहुबली अघहार।। चालो रे मंदरिया में।।

मार्ग–अहिंसा का स्वीकारा, राजपाट तज मुनिपद धारा।
किया आत्म उद्धार।। चालो रे.....
एक वर्ष तक ध्यान लगाया, लघुता से प्रभुता को पाया।
पाया मुक्तिद्वार।। चालो रे.....
बाहुबली की प्रतिमा प्यारी, मन्मथ मन को हरने वाली।
देती शांति अपार।। चालो रे.....
जग के सब नार–नारी आते, बाहुबली के दर्शन पाते।
करते जय जयकार।। चालो रे.....
स्वर्ण रत्न के दीपक लाये, आरती करके मोह नशायें।
पायें सौख्य अपार।। चालो रे.....
गुप्तिनंदी के नंदन आये, 'सुयशगुप्त' प्रभु आरती गाये।
पाये पुण्य अपार।। चालो रे.....

आरती –2 *(तर्ज : प्यारा लागे रे.....)*

बाहुबली भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरति निहारूँ, मूरत लगे मनहार।। आज...
विंध्यगिरी की मूरत है प्यारी, महिमा प्रभु की अतिशयकारी।
दर्शन से मन हरषाय, आज थारी.....।।
केश प्रभु के घुँघराले प्यारे, नैना तो जैसे चंदा सितारे।
आजानबाहु महान, आज थारी.....।।

लम्बी भुजाऐं है वक्ष चौड़ा, सारे जगत को जिसने है जोड़ा।
नभचुम्बी काया विशाल, आज थारी.....॥
तन पे चढ़ी हैं पुष्प लताऐं, जिनवर की घोर तपस्या बताये।
करके सदा जयकार, आज थारी.....॥
जय गोम्मटेशा, जय गोम्मटेशा, गायें भजन ये हम सब हमेशा।
झांझर मंजीरा बजाय, आज थारी.....॥
भक्तों ने जगमग दीपक जलाये, 'चंद्रगुप्त' प्रभु आरती गाये।
बाहुबली गुण गाय, आज थारी.....॥

आरती -3 *(तर्ज : चंदा तू.....)*

चंदा चांदनी फैलाये, सूरज प्रभु को चमकाये।
तारे दीपक बन करते आरती॥
रे बाबा बाहुबली की करो आरती...
आदिनाथ सुत बाहुबली जी, मात सुनंदा जाये-2।
अवधपुरी में जन्मे मन्मथ, नगर बधाई गाये-2।
ढोलक मंझीरा बाजे, सुरनर मिल झूमें नाचें। तारे दीपक बन.....
हिमगिरी जैसा मस्तक ऊँचा, केश बड़े घुंघराले-2।
नयन सुलोचन लगते प्यारे, गोल कपोल निराले-2।
प्रतिमा लगती मनहारी, भक्तों की संकटहारी। तारे दीपक बन.....
अधरों की मुस्कान मनोहर, कण्ठ त्रिवली मनमोहे-2।
अजानबाहु विस्तृत कंधे, तप संयम से शोभे-2।
हम तेरे दर्शन पायें, जिनवर की भक्ति गायें। तारे दीपक बन.....
जगमग दीपों की थाली ले, विंध्यगिरी में आये-2।
'क्षमाश्री' जिनवर गुण गाकर, भवसागर तिर जाये-2।
चरणों की रज लेते हैं, वंदन कीर्त्तन करते हैं। तारे दीपक बन.....

आरती–4

(तर्ज : मैं तो भूल चली.....)

आये बाहुबली के द्वार, आरती उतारें सभी।
लाये रत्नों की दीपक थाल, भक्ति से झूमें सभी।

आदि प्रभु के पुत्र थे प्यारे–2
मात सुनंदा की आँखों के तारे–2 होऽऽ
साकेता के–2 राजकुमार।। भक्ति...

मन्मथ प्रभु को मन से निहारें–2
कष्ट निवारें प्रभुजी हमारे–2 होऽऽ
मिलती है–2 शांति अपार।। भक्ति...

प्रतिमा प्रभु की जग में है प्यारी–2
सत्तावन फुट की लगती मनहारी–2 होऽऽ
दर्शन से–2 करें उद्धार।। भक्ति...

श्री गोम्मटेश्वर के दर्शन पायें–2
आरती करके पुण्य कमायें–2 होऽऽ
'आस्था' को–2, करो भव पार।। भक्ति...

(26) पंचमेरु की आरती

(तर्ज – घुंघरु छम छमा छम बाजे रे...)

घुंघरु छम छमा छम छन नन नन नन बाजे रे, बाजे रे।
पंचमेरु की आरती करने दीपक लाये रे।। घुंघरु छम...

1. शाश्वत पंचमेरु की जग में, महिमा बड़ी निराली।
वहाँ हमेशा भव्य मनायें, होली और दीवाली।। घुंघरु छम...

2. इन पाँचों मेरु पे होता, न्हवन सदा जिनवर का।
सुर-नर-किन्नर नाचें गावें, देख रूप जिनवर का॥ घुंघरु छम...

3. एक-एक मेरु पे सुन्दर, प्रभु के भव्य जिनालय।
सोलह-सोलह चैत्यालय ये, जिनभक्ति के आलय॥ घुंघरु छम...

4. ढाई द्वीप के पंचमेरु की, आरती हम सब गायें।
ढ़ोल नगाड़े वीणा लेकर, ताल मृदंग बजायें॥ घुंघरु छम...

5. जब होता अभिषेक प्रभु का, मुनि ऋद्धिधर आते।
तीर्थंकर बालक को लखकर, 'आस्था' भाव बढ़ाते॥ घुंघरु छम...

(27) ऋषिमंडल यंत्र की आरती

(तर्ज - माईन-माईन....)

ऋषिमंडल की आरती करने, मंगल दीप जलायें।
ऋद्धी-सिद्धी सुख शांति वाला, ऋषिमंडल मन भाये॥
बोलो ऋषिमंडल की जय, बोलो यंत्रराज की जय...

1. यंत्रों का यह महायंत्र है, ऋषिमंडल सुखदाई।
ऋषिमंडल इस यंत्रराज की, महिमा सबने गाई॥
झूम-झूम के यंत्रराज की-2, आरती हम सब गायें। ऋद्धी-सिद्धी.....

2. इसी यंत्र पर श्री जिनवर का, अभिषेक नित होता।
जो श्रद्धा से इसको पढ़ता, उसको कष्ट न होता॥
पाप कर्म भी डरकर भागे-2, गुरुवर यही बतायें। ऋद्धी-सिद्धी.....

3. अपने घर में इसे लगाओ, सुख-समृद्धि पाओ।
भूत-प्रेत व्यंतर बाधा से, छुटकारा पा जाओ॥
'आस्था' भी त्रय गुप्ति पाने, ऋषिमंडल को ध्यायें। ऋद्धी-सिद्धी.....

खण्ड–2

(1) प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव की आरती -1

(तर्ज– इंजन की सीटी.....)

ऋषिवर की आरती में म्हारो मन डोले–2
सगला चालोरे हो ऽऽऽ सगला चालोरे गुरु की शरणा होले होले...
बाठेड़ा में जन्म लिया है सोहन माँ उर आये।
रेवाचंदजी पिता तुम्हारे शास्त्राभ्यास कराये॥ सगला चालो रे...
महावीर कीर्ति गुरुवरजी तुम को राह दिखायें।
अध्यातम के ज्ञाता गुरुवर आतम रोग भगायें॥ सगला चालो रे...
इन गुरुवर से दीक्षा लेकर कुन्थु ऋषि कहलाये।
जन–जन को वात्सल्य हृदय से आगम राह दिखाये॥ सगला चालो रे...
सर्वाधिक दीक्षा के दाता गुरु रत्न कहलाये।
सर्वाधिक सूरी पद दाता कुन्थु ऋषि कहलाये॥ सगला चालो रे...
जन्म जयंती सभी मनाओ गाओ मंगल गान।
युगों–युगों तक गुरु महिमा का करते रहो बखान॥ सगला चालो रे...
ऋद्धि–सिद्धि आदि विद्या से जिन महिमा दर्शाई।
'गुप्ति' भी गुरु भक्ति करके बन जावे शिवराई॥ सगला चालो रे...

आरती नं.2

(तर्ज – दिल जाने जिगर....)

आचार्य कुंथुसागर के द्वार पे आओ।
आरती गाओ रे सभी आरती गाओ॥
चम–चम चमकते स्वर्ण दीप सजाओ।
आरती गाओ रे सभी.....

1. महावीर कीर्ति के शिष्य ये प्यारे।
कुंथुसागर जी गुरुवर हमारे॥
दीपक जलाओ नृत्य रचाओ।
गुरुवर की मूरत मन में बसाओ रे ॥ आरती गाओ.....

2. भक्तों की पीड़ा को गुरुवर मिटाते।
वात्सल्य से ये धर्म सिखाते॥
चरणों में आओ, शीश झुकाओ।
ढ़ोलक मंजीरा मृदंग बजाओ रे ॥ आरती गाओ.....

3. ज्ञानी हैं ध्यानी हैं गुरुवर दयालु।
शरणागतों के तुम हो कृपालु॥
आशीष पाओ, भक्ति रचाओ।
आस्था से गुरुवर की आरती गाओ रे । आरती गाओ.....

आरती नं. 3

(तर्ज - माईन-माईन....)

मणिमय घृत के दीप सजाकर, मंगल वाद्य बजायें।
कुन्थुसागर गुरुवर की सब, आरती भव्य रचायें॥
गुरुवर के चरणों में नमन-2

बाठेड़ा के रेवाचंदजी, विद्वत पिता तुम्हारे।
माता सोहनदेवी के तुम, बाल कन्हैया प्यारे॥
बाल्यकाल की नटखट लीला, देख सभी हर्षायें॥
कुन्थुसागर गुरुवर....

बाल उम्र में धर्म मार्ग पर, चलना उनको भाया।
महावीरकीर्ति गुरुवर से, मुनिदीक्षा को पाया॥

यंत्र-तंत्र-मंत्रों के ज्ञाता, धर्म ध्वजा फहराये।
कुन्थुसागर गुरुवर....

गुरुवर तुम वात्सल्य दिवाकर, कुन्थुगिरी प्रणेता।
शरणागत के रक्षक तुम हो, नंदी संघ के नेता।।
गुप्तिनंदन 'सुयशगुप्त' भी तुम चरणों को ध्याये।
कुन्थुसागर गुरुवर....

आरती नं.-4

(तर्ज : चंदा तू ल्यारे...)

सोने की थाली लायें रत्नों के दीप जलायें।
जगमग उतारें तेरी आरती।। हे गुरुवर जगमग....

रेवाचंद के राजदुलारे सोहन माँ के प्यारे।
बाठेड़ा में जन्म लिया कन्हैया लोग पुकारें ।।
पावागढ़ पहुँचे स्वामी बनने तुम शिवपथगामी।।
जगमग उतारें...

वेष दिगम्बर धारण करने की मन में थी ठानी।
महावीर कीर्ति गुरुवर की शान बने तुम ज्ञानी।।
गुरुवर तुम हो उपकारी भक्तों के संकटहारी।।
जगमग उतारें...

पंचमहाव्रत धारी गुरुवर जन-मन के हितकारी।
हे ! छत्तीस मूलगुण धारी आगम के उपकारी।
आई है शरण तुम्हारी 'क्षमा' है भक्त तुम्हारी।।
जगमग उतारें तेरी आरती....

(2) वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनन्दीजी की आरती नं.1

(तर्ज : दिल जाने जिगर..)

आचार्य कनकनन्दी की जयकार करो रे।
आरती करोऽरे सभी आरती करो॥
लेकर के स्वर्ण थाल दीपमाल भरो रे।
आरती करो रे सभी आरती करो॥

ज्ञानी में ज्ञानी है गुरुवर हमारे।
जिनवाणी माता की आँखों के तारे॥
सबसे निराले गुरुवर हमारे।
गुरुवर हमें भी ज्ञानवान करो रे॥ आरती.....

देश-विदेशों में गुरुवर की चर्चा।
आओ करे इनकी दीपों से अर्चा॥
गुरुभक्त आये, गुरु भक्ति गाये।
गुरुवर के चरणों में पाप हरो रे॥ आरती.....

भक्ति की रंगोली हमने सजाई।
श्रद्धा के दीपों की ज्योति जलाई॥
दीपक सजाओ बाजे बजाओं।
घण्टों की घन-घन से नाद करो रे॥ आरती.....

चम-चम चमकते हैं दीपक ये न्यारे।
छम-छम-छम नाचे हैं भक्त ये सारे॥
घुँघरू छनकाओ दीपक चमकाओ।
गुरुदेव 'चन्द्र' को भी धन्य करो रे॥ आरती.....

आरती नं. 2

(तर्ज : मिलो ना तुम तो...)

वैज्ञानिक आचार्य हमारे, कनकनंदी गुरु न्यारे (प्यारे)
करें हम आरती ऽऽऽ...2
कनक रत्न की थाल सजाकर... जगमग दीप सजायें।
करें हम आरती ऽऽऽ...2 (ध्रुव)

कुंथु गुरु के नंदन, हीरा हो तुम नन्दी खान के।
दादा गुरु हो स्वामी, इस वसुधा पे विज्ञान के।।
सत्य साम्य सुख अमृत पाने, गुरु शरणा हम आयें।
करें हम आरती ऽऽऽ...2

श्रेष्ठ मेधावी गुरुवर, स्वावलम्बी सत्यग्राही आप हो।
सच्चिदानन्द एक हूँ मैं, करते सदा इसका जाप हो।।
''मैं'' में सिद्ध स्वरूप छिपा है, सबको आप बतायें।
करें हम आरती ऽऽऽ...2

कितनी उदारता है, हे ज्ञानयोगी ! गुरु आप में।
राग-द्वेष पाप माया, आते न गुरुवर तेरे पास में।।
कवियों के गुरु महाकवि हो, अनुभव रत्न लुटायें।
करें हम आरती ऽऽऽ...2

सर्व विद्या के दाता, मुख में बसा ब्रह्माण्ड है।
समता बिना ना कोई, सार है धर्म क्रियाकाण्ड में।।
पूर्वाचार्य सम ज्ञान भरा है, 'आस्था' से हम पायें
करें हम आरती ऽऽऽ...2

(3) प.पू. बाल ब्रह्मचारी प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की आरती नं.-1

(तर्ज : इंजन की सीटी में...)

सगला चालो रे भाया मंदिर होले होले,
गुरुवर की भक्ति में म्हारो-मन डोले-2

बाल ब्रह्मचारी हैं गुरुवर, सौम्य मूर्ति के धारी।
इनके दर्शन करने आवे, मिल के सब नर नारी॥ सगला...

बाल वय में दीक्षा धारी, वरने मुक्ती नारी।
सकल परिग्रह त्याग बने, जो वेष दिगम्बर धारी॥ सगला...

ज्ञान ध्यान में रत जो रहते, परिषह को भी सहते।
कर्म विजेता बनने को जो, उपसर्गों को सहते॥ सगला...

बाल युवा इनके मन भावें, शिक्षा इनसे पावें।
धर्म नीति की शिक्षा देकर, जन मन को हर्षावे॥ सगला...

भक्ति योग के रस में रमते, औरों को रमवाते।
भौतिक रस के दीवानों को, आतम रस पिलवाते॥ सगला...

नहीं किसी से पक्षपात है, समता रस के धारी।
'क्षमा' करो सब दोष हमारे, आये शरण तिहारी॥ सगला...

आरती-2

तर्ज : माईन माईन...

गुप्ति गुरु मम हृदय विराजो, मुक्ति पाने आया।
स्वर्ण पात्र में रत्न दीप ले, आरती करने आया॥
गुरुवर के चरणों में नमन-2

श्री गुरुवर की आरती करके, मिथ्या भाव हटायें।
चंचल मन को गुरु सन्मुख कर, सम्यक् भाव बनायें।।
कोमलचंद के राज दुलारे, माँ त्रिवेणी के प्यारे।
नगर भोपाल में जन्म हुआ था, सब जन मंगल गाये।।
गुरुवर के चरणों में नमन-2

कर्म विजेता बनने निकले, छत्तीस गुण के धारी।
संयम पथ पर चलकर उनने, छोडी माया सारी।।
सूरी पद के धारी गुरुवर, पंचाचार विहारी।
सौम्य मूर्ति के धारी तुम हो, मुक्ति पथ अधिकारी।।
गुरुवर के चरणों में नमन-2

झाँझर ढपली ढोल बजाकर, गुरु की भक्ति गाऊँ।
भक्ति भाव से नृत्य रचाकर, अतिशय पुण्य कमाऊँ।।
गुरु की शरणा पाकर मैंने, संयम पथ अपनाया।
गुप्ति गुरु के गुण गाने को, 'सुयश' शरण में आया।।
गुरुवर के चरणों में नमन-2

आरती -3

(तर्ज : ज्ञान ध्यान में...)

गुण सागर से गागर भरने, चरणन शीश झुकाता हूँ।
गुप्तिनंदी गुरुवरजी की मैं, आरती करने आता हूँ।।

छत्तीस मूलगुणों के धारी, व्रत संयम दातारी हो-व्रत...।
निज स्वरूप को पाने वाले, मुक्ति पथ अधिकारी हो-मुक्ति...।
तम अज्ञान हटाओ मेरा, मणिमय दीप जलाता हूँ-2।।
गुप्तिनंदी गुरुवरजी की.....

सूरज सा गुरु तेज तुम्हारा, सूरी पद के धारी हो–सूरी...।
शांति सुधामृत समता धारी, सर्व दु:खों के हारी हो–सर्व...।
करुणानिधि के श्री चरणों में, समता पाने आया हूँ–2॥
गुप्तिनंदी गुरुवरजी की.....

ध्यान यज्ञ में कर्म जलाकर, पंच परावर्तन हरते–पंच...।
षट् आवश्यक् पालन करते, शिष्यों का अनुग्रह करते–शिष्यों...।
यथाख्यात चर्या पाने का, भाव हृदय में लाया हूँ–2॥
गुप्तिनंदी गुरुवरजी की.....

श्रुत मंथन में निशदिन रत हो, प्रज्ञायोगी कहलाते–प्रज्ञा...।
मिथ्यामत का खण्डन करके, जिनशासन महिमा गाते–जिन...।
'सुयशगुप्त' गुरु को वंदन कर, शुभयश पाने आया हूँ–2॥
गुप्तिनंदी गुरुवरजी की.....

आरती –4

(तर्ज : मैं तो आरती उतारूँ रे...)

मैं तो आरती उतारूँ रे, गुप्तिनंदी गुरुवर की।
जय–जय गुप्तिनंदी जय–जय हो–2

तुम जन्मे नगर भोपाल, कोमलसुत प्यारे–2
माता त्रिवेणी के लाल, सब जग से न्यारे–2
लेकर के रत्न थाल, चमचमाती दीप माल। भक्ति रचाये रे।
हो सब मिल भक्ति रचाये रे–मैं तो...

हे सौम्य छवि ऋषिराज, मेरे मन भाये–2
तुम जग के हो सरताज, तेरे गुण गायें–2

शीश धरें भक्ति करें, छम छमा छम नृत्य करें, बाजे बजायें रे।
हो सब मिल बाजे बजायें रे–मैं तो...

हे ज्ञान रवि गुरुराज, ज्ञान किरण दे दो–2
यह 'चन्द्र' वरे शिवराज, मुक्ति पथ दे दो–2
मिलकर जयकार करो, जय–जय गुरुदेव कहो। खुशियाँ मनाओ रे।
हो सब मिल खुशियाँ मनाओ रे –मैं तो...

आरती–5

(तर्ज : आने से उसके आये बहार...)

हाथों में लेके दीपों का थाल। आया गुरुवर मैं तेरे द्वार।
करें हम आरतियाँ, गुप्ति गुरुवर तेरी।
मनहारी मूरतियाँ, गुप्ति गुरुवर तेरी।

शांत सी ये मूरत, देती समता का संदेश न्यारा।
आरती करें हम, दे दो अपनी शरण का सहारा।
ढोलक ले, झाँझर ले, गायें हम आरतियाँ। गुप्ति गुरुवर तेरी...

जगमगाते दीपक, कंचन थाली में लाये सजाकर।
कर रहे हैं जय जय, गुप्ति गुरुवर की बाजे बजाकर।
रत्नों के दीपक ले, गायें हम आरतियाँ। गुप्ति गुरुवर तेरी...

ज्ञान के धनी हो, ज्ञान ज्योति से कर दो उजाला।
ज्ञान की किरण से, चमके ये 'चन्द्रगुप्त' तुम्हारा।
राज वरूँ, शिवपुर का गायें हम आरतियाँ। गुप्ति गुरुवर तेरी...

आरती –6

(तर्ज : दिल जाने जिगर...)

गुरुदेव गुप्तिनंदि की जयकार करो रे,
आरती करो रे सभी आरती करो।
आशीष दे गुरुवर ये झोली भरो रे,
आरती करो रे सभी आरती करो॥

गुरुवर हमारे कविता बनाते।
पूजा विधानों की रचना रचाते॥
सबको जगायें, सबको पढ़ायें–2
ज्ञानी गुरुवर से ज्ञान वरो रे॥ आरती करो...

हमने सजाई है दीपों की थाली।
गुरुवर की मूरत है सबसे निराली॥
उसको निहारूँ, मन में बसाऊँ–2
गुरुवर के चरणों में ध्यान धरो रे॥ आरती करो...

ढ़ोलक बजायें झाँझर बजायें।
दीपों की थाली ले भक्ति रचाये॥
गुणगान गायें, बाजे बजायें–2
गुरुदेव 'चन्द्र' को भी धन्य करो रे॥ आरती करो...

आरती –7

(तर्ज : ना कजरे की धार)

हे गुप्तिनंदी गुरुराज, दो हमको आशीर्वाद।
लेकर दीपों का थाल, हम सब आरती करते आज –2–हो ऽऽऽ

भोपाल नगर में जन्मे, खुशियाँ ही खुशियाँ बरसे।
पितु कोमलचंद तुम्हारे, संग मात त्रिवेणी हरषे।।
मन को हरले, हर्ष भरले, तेरा बालरूप मनहार। हे गुप्तिनंदी.....

कुंथुसागर सूरिवर ने, दीक्षा दे तुम्हे उबारा।
फिर कनकनंदी ऋषिवर ने, शिक्षा से तुमको तारा।।
भक्त आयें, भक्ति गायें, जाने दुनियाँ का सार। हे गुप्तिनंदी.....

तुमसे ही गुरुवर जग में, हो ज्ञान का उजियारा।
हम आरती करते गुरुवर, उस ज्ञान-दीप के द्वारा।।
भव-भ्रमण से, कर्म वन से, हो 'चन्द्रगुप्त' भी पार। हे गुप्तिनंदी.....

आरती -8

(तर्ज : ढोलीड़ा ढोल धीमो-धीमो...)

ढोलीड़ा ढोल धीमो धीमो वगाड़ माँ धीमो-2
गुरु गुप्तिनंदी की आरती रचाये जा।।
जय मुनिवर, जय गुरुवर, जय ऋषिवर। ढोलिड़ा...

जब गुरुवर जी गर्भ में आय, भोपाल नगरी धन्य कहाय।
माता त्रिवेणी अति हरषाय, कोमलचंदजी मंगल गाय।।
आ रे ओ चंदा सूरज तू आये जा-सूरज.....

कुंथुसागर गुरुवर महान्, करते तुमको दीक्षा प्रदान।
कनकनंदी गुरुवर के पास, पाया तुमने ज्ञान प्रकाश।।
दीपों में मोती माणक जड़ाये जा-माणक.....

हे गुरु ज्ञान दिवाकर आप, करना मेरे क्षमा सब पाप।
आरती कर झूमे हम आज, दे दो हमको शिवपुर राज।
भक्ति से 'चन्द्रगुप्त' गुरु गुण गाये जा-गुरु गुण.....

आरती –9

(तर्ज : मैं तो भूल...)

हम तो आरती उतारें गुरुराज हमें मुक्ति द्वारा मिले।
पाया हमने गुरु का साथ हमें मुक्ति द्वारा मिले॥

कुन्थु गुरु से मुनि पद को धारा।–2
कनकनंदी से ज्ञान विस्तारा। होऽ
तुमने छोड़ा–2, परिग्रह पाप॥ हमें मुक्ति...

काव्य रचाते हो पूजा बनाते।–2
धर्मोपदेश से मन को लुभाते॥ होऽ
करते हो–2, जगत उद्धार॥ हमें मुक्ति...

जिनवाणी माता का संदेश न्यारा।–2
करते हैं गुरुवर जी उसका प्रचारा॥ होऽ
करें जग में–2, धरम का प्रचार॥ हमें मुक्ति...

सुबह शाम गुरु आरती कीजे।–2
यश कीर्ति सुख और आनंद लीजे॥ होऽ
पाये 'राजश्री'–2, मुक्ति का द्वार॥ हमें मुक्ति...

आरती –10

(तर्ज : धीरे–धीरे बोल...)

गुप्तिनंदी की जय बोलो, जय बोलो सब जय बोलो
हम गुरु की आरती गा रहे, जयकार लगाने आ रहे। गुप्तिनंदी की...

पंच महाव्रत धारी की जयकार, करने आये मिलकर सब नर नार।
गुप्ति गुरु ने छोड़ा घर संसार, बने दिगम्बर गुप्ति त्रय को धार।
ढपली बजा, ढोलक बजा–2, हम गुरु की...

प्रज्ञायोगी कविहृदय ऋषिराज, ज्ञान निधि को लेने आये आज।
श्रमण संघ के हो आचार्य महान्, व्रत संयम दे करते जग उत्थान।
घुँघरु बजा, घंटा बजा-2, हम गुरु की...
हीरे मोती स्वर्ण जडित ले थाल, उनमें चमके रत्नदीप की माल।
आज बजाये नाना विध के साज, आरती करके पावे मुक्ति 'राज'।
वीणा बजा, झांझर बजा-2, हम जगमग दीपक ला रहे।
गुप्ति गुरु के गुण गा रहे। गुप्तिनंदी की...

आरती -11 *(तर्ज : प्यारा लागे...)*

प्यारा लागे छे गुरुराज आज थारी आरती उतारुँ
गुप्तिनंदी गुरुराज आज थारी आरती उतारुँ
कोमलचंद के राजदुलारे, नगर भोपाल के नयन सितारे।
त्रिवेणी माँ सुखकार।। आज थारी आरती उतारुँ
जग वैभव को नश्वर जाना, मुख मोड़ा धारा मुनि बाना।
त्यागा सब संसार।। आज थारी आरती उतारुँ
बालवय में दीक्षा धारी, मुक्तिपथ के जो अधिकारी।
करते धर्म प्रचार।। आज थारी आरती उतारुँ
रत्नजड़ित दीपक ले आये, झूमें नाचें वाद्य बजायें।
नाचें सब नर नार।। आज थारी आरती उतारुँ
ज्ञानी ध्यानी गुरु गुण गायें, ज्ञान शिविर में हम सब आये।
पायें ज्ञान भंडार।। आज थारी आरती उतारुँ
गुरु शरण जग में हितकारी, बाल-युवा सबके मन हारी
हम सब के आधार।। आज थारी आरती उतारुँ
'राज' गुरु की शरणा आये, अपना जीवन धन्य बनाये
गुरु शरण सुखकार।। आज थारी आरती उतारुँ

आरती –12

(तर्ज : चंदा तू लारे...)

जगमग दीपक ले आये गुरुवर की आरती गाये
हम सब उतारें तेरी आरती हो गुरुवर...

कोमलचंद के लाडले गुरु माँ त्रिवेणी के जायें,–2
नगर भोपाल में जन्म लिया है सब मन में हषार्ये,–2
ढोलक मंझीरा लाये गुप्ति गुरु के गुण गाये। हम सब...

बालवय में दीक्षा लेकर व्रत संयम को धारा,–2
कर्मों का बंधन तजने को वेष दिगम्बर धारा,–2
घुंघरूँ की छम छम बाजे गुरुवर की आरती गायें। हम सब...

गुरु चरणों में ज्ञान ध्यान की अलख जगाने आये,–2
व्रत संयम के भाव जगाये आश हृदय में लाये,–2
'राजश्री' शरणा आये गुप्ति गुरु के गुण गायें। हम सब...

आरती –13

(तर्ज : मेरा मन डोले...)

गुण आगर की गुप्तिनंदी की ले मंगल दीप जलाय हो हम आज उतारें आरतिया।

गुरु के दर्शन पा कर हमने अपने पाप नशाये,
भक्ति भाव से आरती करके भक्त सभी हरषाये। गुरुजी भक्त...
ऐसे ऋषिवर की, ऐसे मुनिवर की, ले मंगल दीप...

कोमलचन्द के सुत जो प्यारे माँ त्रिवेणी के दुलारे,
नगर भोपाल में जन्म लिया हैं बनकर धर्म सितारे॥ प्रभुजी बनकर...
भव तारण की, तम वारण की... ले मंगल...

कुँथु सिंधु से दीक्षा लेकर वेष दिगम्बर धारा,
लघुवय से निज आत्मगुणों से किया धर्म विस्तारा ॥ प्रभुजी किया...
बाल योगी की, प्रज्ञायोगी की... ले मंगल...

कनकनंदी गुरुवर से तुमने ज्ञान रतन धन पाया,
रत्नत्रय को धारण करके आत्म सुयश फैलाया ॥ प्रभुजी आत्म...
सुख कारक की, दुःख हारक की... ले मंगल...

आज हमारे भाग्य जगे हैं गुरु की आरती करके,
मोह तिमिर को दूर भगा दो हम पर करुणा करके॥ प्रभुजी हम पर...
'क्षमा' धारी की, गुप्तिनंदी की... ले मंगल...

आरती – 14

(तर्ज – चपटी भरी चोखा...)

सोना नी थाली में घी नो छे दीवड़ो, आरती नी थाली लइये रे।
हालो हालो मंदरिये जइये रे–2

भक्ति नी भावना में डोले म्हारो हीवडो–2 भावना नी थाली लइये रे।
हालो हालो मंदरिये जइये रे–2

बाल ब्रह्मचारी म्हारा गुरुजी–2 ऐनी संगति करिये रे।
हालो हालो मंदरिये जइये रे–2

ज्ञानी, ध्यानी म्हारा गुरुजी–2 इनसे शिक्षा लइये रे।
हालो हालो मंदरिये जइये रे–2

समता धारी म्हारा गुरुजी–2 ऐने पासे जइये रे।
हालो हालो मंदरिये जइये रे–2

चंदन केसर घसी ने लावो-2 गुरु चरण में चढ़इये रे।
हालो हालो मंदरिये जइये रे-2

'क्षमाश्री' गुरुवर शरणे आयी-2 मुक्ति माने दइये रे।
हालो हालो मंदरिये जइये रे-2

आरती -15

(तर्ज : चली चली रे पतंग...)

झीनी झीनी उड़ी रे गुलाल चालो रे मंदरिया मा...
म्हारा गुरुजी की मूरत प्यारी-2 समता रस भण्डार॥ चालो रे...
क्रोध, मान, मद, लोभ भगावे-2 करते ब्रह्म विहार॥ चालो रे...
भोली भाली सूरत प्यारी-2 लागे है मनहार॥ चालो रे...
मधुर मधुर वाणी जो बोले-2 वात्सल्य हृदय अपार॥ चालो रे...
ज्ञानी बनावे, धर्म सिखावे-2 करते जग उद्धार॥ चालो रे...
गुरुवर तारो हमको उबारो-2 कर दो बेडा पार॥ चालो रे...
'क्षमा' शरण में तेरी आवे-2 पाने मुक्ति द्वार॥ चालो रे...

आरती -16

(तर्ज : बाजे छम छम...)

बाजे छम छम छम छमा छम बाजे घुंघरु-बाजे घुंघरु
गुरुवर की आज मैं आरती करुँ....

सांझ सवेरे आरती कीजे, अपना जनम सफल कर लीजे।
रत्नों की थाल लेके, आरती करुँ-2 ॥ गुरुवर की.....

सौम्य शांत मुद्रा के धारी, बाल तपस्वी हैं मनहारी।
सोने की थाली लेके, आरती करुँ–2 ॥ गुरुवर की.....

समता रस का पान जो करते, निर्भय आत्म रमण नित करते।
ढोल नगाड़े लेके, आरती करुँ–2 ॥ गुरुवर की.....

बने दिगम्बर मुद्रा धारी, वरने शिवरमणी भरतारी।
झांझर मंजीरा लेके, आरती करुँ–2 ॥ गुरुवर की.....

कुंथु गुरु से दीक्षा पाये, जीवन अपना धन्य बनाये।
मणिमय दीप लेके, आरती करुँ–2 ॥ गुरुवर की.....

कनकनंदी गुरु ज्ञान निधाना, उनसे पाया मोक्ष खजाना।
जगमग दीप लेके, आरती करुँ–2 ॥ गुरुवर की.....

'क्षमा' गुरु की शरणा पाये, नरभव अपना सफल बनाये।
ढपली और वीणा लेके, आरती करुँ–2॥ गुरुवर की.....

आरती – 17

(तर्ज – एके मोक्ष दरवाजे तंबु...)

कंचन थाल में घृत के जगमग दीप जले।
गुप्तिनंदी गुरु की आरती करने चले ।।

हो ज्ञान दिवाकर, गुरु धर्म प्रभाकर–2
प्रज्ञायोगी से प्रज्ञा ज्योति पाने चले॥ गुप्तिनंदी...॥1॥

गुरुवर तेरी वाणी, जैसे हो माँ जिनवाणी–2
गुरुवाणी का अमृत दिन–रात मिले॥ गुप्तिनंदी...॥2॥

आरती करके गुरु की, हम अपना ज्ञान बढ़ाये–2
हर भक्त को गुरुवर तुमसे ज्ञान मिले॥ गुप्तिनंदी...॥3॥

ज्ञानी ध्यानी गुरुवर, सन्मार्ग बतायें–2
सर्व विषयों की शिक्षा गुरुवर तुमसे मिले॥ गुप्तिनंदी...॥4॥

गुरुवर तेरी सेवा, देती है सच्ची मेवा–2
करे 'आस्था' गुरु पे सुख–शांति मिले॥
गुप्तिनंदी गुरु की आरती करने चले॥ गुप्तिनंदी...॥5॥

आरती – 18

(तर्ज – घुंघरु छमा छमा छम छन...)

घुंघरु छम छमा छम छन नन नन बाजे रे–2
गुप्तिनंदी गुरु की आरती में, मनवा नाचे रे... घुंघरु

कुन्थु गुरु से मुनि दीक्षा ले, धर्म ध्वजा फहराई।
कनकनंदी से शिक्षा लेकर, प्रज्ञा ज्योति पाई॥ घुंघरु....॥1॥

आर्ष मार्ग संरक्षक का पद, कुंथु गुरु से पाया।
कनकनंदी गुरुवर ने तुमको, प्रज्ञायोगी बनाया॥ घुंघरु....॥2॥

सरल स्वभावी ज्ञानी गुरुवर, महाकवि कहलाते।
पाने को वात्सल्य आपका, भक्त दूर से आते॥ घुंघरु....॥3॥

जो माँगे आशीष आपका, उसको मार्ग बताते।
बिगड़े काम बने भक्तों के, सोया भाग्य जगाते॥ घुंघरु....॥4॥

धर्म तीर्थ के प्रेरक हो तुम, 'गुप्तिनंदी' गुरुरायी।
'आस्था' से हम करें आरती, बनने शिवपुररायी॥ घुंघरु...॥5॥

आरती - 19

(तर्ज - मिलो ना तुम तो....)

परम पूज्य प्रज्ञायोगी श्री, गुप्तिनंदी गुरुदेव।
करें हम आरती...2
श्री आचार्य महाकवि योगी, गुप्तिनंदी गुरुदेव।
करें हम आरती...2

एक अगस्त को, जन्मे हो तुम भोपाल में।
गीत गुरु के गायें, भक्त सभी लय ताल में।।
मुस्काती छवि देख आपकी, मन पुलकित हो जाये।।
करें हम आरती...2 ।।1।।

22 जुलाई को, मुनि दीक्षा ली गुरु आपने।
पीछी कमंडल धारी, शास्त्र पढ़ें हैं कई आपने।।
दीक्षा शिक्षा दाता गुरुवर, कुंथु कनक कहलाये।
करें हम आरती...2 ।।2।।

27 मई को, आचार्य पद मिला आपको।
श्रुत पंचमी के दिन, गुरुवर ने पद दिया आपको।।
गोम्मटगिरी पर सूरि पद का, उत्सव भव्य मनायें।
करें हम आरती...2 ।।3।।

गुरुवर के चरणों में, चंदन लगाके करें वंदना।
पाद-प्रक्षालन व, आरती करके करें अर्चना।।
शुभ आशीष गुरु का पाने, 'आस्था' शीश झुकाये।।
करें हम आरती...2 ।।4।।

आरती – 20

(तर्ज–चिंतामणि पारसनाथ की...)

गुप्तिनंदी महाकविराज की, करें आरती... करें आरती।
गुप्तिनंदी गुप्तिनंदी जय हो तुम्हारी।
चरणों में आये तेरे भक्त पुजारी। गुप्तिनंदी महाकवि...

गुरुवर तेरी शान निराली, सबके मन को हरने वाली।
जिसने तेरा दर्शन पाया, उसको अद्‌भुत आनंद आया॥ आ..आ..
आओ गुरु को ध्यायें – जय हो।
सब मिल शीश झुकायें – जय हो।
अपना भाग्य जगायें – जय हो।
रत्न थाल सजायें, आरती उतारें गुरुराज की॥ करें... ॥1॥

छत्तीस मूलगुणों के धारी, हे ज्ञानयोगी ! बाल ब्रह्मचारी।
जिनवाणी के नंदन प्यारे, ज्ञानी–ध्यानी गुरु हमारे॥ आ.. आ..
इनके गुण हम गायें – जय हो।
इनकी भक्ति रचायें – जय हो।
इनकी आरती गायें – जय हो।
स्वर्ण थाल सजायें, आरती करें ऋषिराज की। करें.... ॥2॥

पूजन भजन विधान बनाते, जिन प्रभुओं की कथा सुनाते।
आर्ष मार्ग की ज्योत जलाते, भक्तों को प्रवचन से लुभाते॥ आ..आ..
सबको पास बुलायें – जय हो।
सबको धर्म सिखायें – जय हो।
सच्चा मार्ग दिखायें – जय हो।
'आस्था' भाव जगायें, आरती उतारें सूरिराज की। करें.... ॥3॥

आरती – 21

(तर्ज–अपने पिया की मैं तो...)

गुरुवर गुप्तिनंदी की आरती उतारें–2
आये गुरु के द्वारे दीप थाल ले, हो ऽऽ दीप माल ले।
हम तो आरती उतारें...

लघुवय में दीक्षा ली गुरु ने, कुंथुसागर गुरुवर से।
प्रज्ञामोती मिले आपको, कनकनंदी जी गुरुवर से।।
ज्ञान की ज्योति पायें, गुरुद्वार पे.. हो ऽऽ गुरु द्वार पे
हम तो आरती उतारें...।।1।।

तेरी वाणी में जादू तुम, भक्तों के भगवान हो।
सरल स्वभावी ज्ञानी गुरुवर, 'रत्नत्रय' का दान दो।।
सोने के दीप जलायें तेरे द्वार पे.. हो ऽऽ तेरे द्वार पे
हम तो आरती उतारें...।।2।।

गुरुवर जिसको मंत्र सुनाते, उसके दुःख मिट जाते हैं।
जिसके सिर पे पीछी रखते, वो धन–वैभव पाते हैं।।
'आस्था' से आये हम तो, गुरु द्वार पे.. हो ऽऽ गुरु द्वार पे
हम तो आरती उतारें...।।3।।

आरती – 22

(तर्ज – जय गणेश जय....)

गुप्तिनंदी गुप्तिनंदी, नाम है निराला।
आरती करो सभी, सजाओ दीप माला।। गुप्तिनंदी...

लक्ष्य–लक्ष्य दीपों से, आरती उतारें।
भक्ति करने नृत्य करने, आये तेरे द्वारे।।
गुरु नाम मंत्र की, जपेंगे नित्य माला। आरती करो...।।1।।

कुंथु गुरु से, मुनि दीक्षा पाई।
कनकनंदी गुरु से, सर्व शिक्षा पाई।।
गुरु तेरा नाम ही बड़ा, रहस्य वाला। आरती करो...।।2।।
देख मुनि दीक्षा को, भक्त हर्षायें।
रोहतक नगरियाँ में, खुशियाँ मनायें।।
आप मुनिराज बने, खोले मोक्ष ताला। आरती करो...।।3।।
आर्ष मार्ग का बिगुल, जो विश्व में बजायें।
सूत्र धर्म के हमें ये, नित्य ही बतायें।।
धर्म क्रांति सूर्य ने, कमाल किया आला। आरती करो...।।4।।
प्रज्ञा का योग धरें, आप प्रज्ञा योगी।
चित्त से कविहृदय हो, आप बाल योगी।।
दे दो 'आस्था' को, गुरु ज्ञान का उजाला। आरती करो...।।5।।

आरती – 23

(तर्ज–भोला नहीं माने, नहीं माने रे...)

भक्त नहीं माने रे नहीं माने, मचल गये दर्शन को

1. गुरु भोपाल नगर में जन्मे, आये कुंथु गुरु के द्वारे।
   दीक्षा लेके हर्षाये, हम आरती करने आये।
2. ज्ञानी ध्यानी गुरु गुप्तिनंदी, तुम फहराते धर्म की झंडी।
   तुम ध्वजा लेके आये, हम आरती करने आये।
3. तेरी वाणी में जादू भरा है, तुमने भक्तों का मंगल करा है।
   तुम कल्याण करने आये, हम आरती करने आये।
4. तेरे चरणों में आये गुरुवर, हमें तारों दुःखों से ऋषिवर।
   हम 'आस्था' से गुरु गुण गायें, हम आरती करने आये।

आरती नं. 24

(तर्ज – हो मारी घूमर छे...)

हो म्हारा गुप्तिनंदी जी गुरुवर, आया थारे द्वार
आरती करवा मैं आस्या, हो गुरुजी आरती
करवा मैं आस्या

1. हो माने दरशन दिस्या, गुप्तिनंदी गुरुराज–2, आरती
2. हो थे तो ज्ञान की ज्योति जलाओ, गुरुराज–2, आरती
3. हो माने संस्कार दीजों गुप्तिनंदी, गुरुराज–2, आरती...
4. हो थे तो भक्ति रो मार्ग दिखास्या, गुरुराज–2, आरती...
5. हो माने पूजा सिखावा आया ज्ञानी गुरुराज–2 आरती...
6. हो थे तो कथा सुनाओ प्यारी–2 गुरुराज–2 आरती..
7. हो थाने 'आस्था' सु ध्यावें सब भक्त, गुरुराज–2 आरती...

आरती नं 25

(तर्ज – तूने पायल जो...)

हो मैंने घी का दीप जलाया, गुरु की आरती करने आया।
हो मेरे मन में विराजो गुरुदेव, हो गुरुवर, मन में पधारो गुरुदेव।

1. तुम्हारी प्यारी मूरत, लगे हैं चांद की सूरत,
ज्ञानी ध्यानी गुरुवर, हो गुरुवर ऽऽऽ
तुमने वेश दिगम्बर धारा, गुप्तिनंदी नाम है प्यारा
तेरा बाल रूप मन भाये, भक्तों का मनवा हरषाये
तुमपे वारि–वारि जाऊँ गुरुदेव, हो गुरुवर...

2. हमारे प्यारे गुरुवर, तुम ही हो ज्ञान समुंदर।
ज्ञानी ध्यानी गुरुवर, हो गुरुवर ऽऽऽ
तुमने विधान अनेक रचाये, कई भक्तों के कष्ट मिटाये
सबको भक्ति मार्ग दिखाये, सबपे वात्सल्य भाव दिखाये
तुमको नमन करे गुरुदेव... हो गुरुवर...

3. तुम्हीं हो प्रज्ञायोगी, बनूं मैं तुम सम योगी।
ज्ञानी ध्यानी गुरुवर, हो गुरुवर ऽऽऽ
हे आर्षमार्ग संरक्षक, गुरुवर धर्म तीर्थ पथ दर्शक
गुरुवर छत्तीस गुण के धारी, तेरी आरती मंगलकारी
''आस्था'' भाव जगाये, गुरुदेव... हो गुरुवर...

आरती - 26

(तर्ज- अर र र र...)

गुरु की आरती करने आओ, आरती करने दीपक लाओ
सभी मिल झूमो नाचो रे, अर ररर...

1. गुरुवर गुप्तिनंदी चोखे-2 काम हैं इनके बड़े अनोखे-2
इनके चरणों में आओ रे, अर ररर...

2. इनकी कीर्ति जग में भारी-2 भक्त हैं इनके सब नर-नारी-2
सभी जन कीर्तन गाओ रे, अर ररर...

3. त्याग का संदेशा गुरु देवे-2 प्यार से सबको अपना लेवे-2
इनकी भक्ति रचाओ रे, अर ररर...

4. नगाडा ढ़ोलक झांझ बजाओ-2 गीत संगीत गुरु के गाओ-2
छमाछम नृत्य नचाओ रे, अर ररर...

5. गुरु के गुण ''आस्था'' से गायें-2 ज्ञान की अमृत गंगा पायें-2
सभी मिल शीश झुकाओ रे, अर ररर...गुरु की आरती...

आरती नं. 27

(तर्ज–पारस प्यारा लागो...)

गुरुवर जी प्यारा लागो, गुप्तिनंदी प्यारा लागो
थाकी आरती करवा, दौड्या–2 आया। ओ म्हारा..
गुरुवर जी, आया ओ म्हारा..
माँ आरती करवा आवाला–2 आवाला

1. थाका गुरुवर कुंथुसागर, थाके अंदर ज्ञान की गागर
   थाके दर्शन की अभिलाषा, अंदर जागी ओ म्हारा..
   गुरुवर जी–2... मैं आरती...
2. थाको नाम है गुप्तिनंदी, थाका गुरुवर कनकनंदी
   थे शिक्षा लेकर, ज्ञानी ध्यानी बनग्या ओ म्हारा
   गुरुवर जी–2, मैं आरती...
3. थाका विधान प्यारा–प्यारा, प्रवचन लागे मनहारा
   थाकी कथा मैं दौड्या–2, श्रावक, आवे ओ म्हारा
   गुरुवर जी–2.., माँ आरती...
4. थे जहाँ–जहाँ पे जाओ, वहाँ धर्म का शंख बजाओ।
   थाकी वाणी प्यारी–2, माने लागे ओ म्हारा
   गुरुवर जी–2..., माँ आरती
5. थे पूजा भक्ति सिखाओ, सोया न आन जगाओ।
   थाका कीर्त्तन करवा, चरणा दोड्या आया ओ म्हारा
   गुरुवर जी–2..., माँ आरती
6. ''आस्था'' सु थाने ध्यावा, चरणा में शीश झुकावा
   थाकी भक्ति की घणी इच्छा, मन में जागी ओ म्हारा
   गुरुवर जी–2..., माँ आरती

आरती नं. 28

(तर्ज–ऐसे लहरा के तू...मेरे रस्के...)

मेरे गुप्ति गुरु, आरती हम करें–2
भक्ति करने की, अब शुभ घड़ी आ गई–2
प्रज्ञायोगी गुरु, आरती हम करें–2
तेरी आरती करके मजा आ गया।। मेरे गुप्ति..

तेरे दर्शन मिले, नयना मेरे खिले।
तेरे चरणों में आकर मजा आ गया।
तेरा कीर्त्तन करें, तेरा सत्संग करें।
तेरे चरणों में आकर मजा आ गया।।1।। मेरे गुप्ति..

ज्ञानी ध्यानी गुरु, ज्ञान तुमसे मिला–2
सातों सुर में सुनाये जो सुन्दर कथा।।
तेरी भक्ति करे, तेरा कीर्तन करें।
ऐसा अवसर मिला तो मजा आ गया।।2।। मेरे गुप्ति..

ढोल बाँसुरी सारंगी घुंघरु बजे।
झुमते नाचते गा रहे आरती।।
भक्ति की रात है, गुरुवर का साथ है।
ऐसा अवसर मिला तो मजा आ गया।।3।। मेरे गुप्ति..

लक्ष्य दीपक लिये भक्त सन्मुख खड़े।
बड़े सौभाग्य से गुरु चरण मिले।।
पिच्छी सर पे लगी, मेरी किस्मत जगी।
ध्याया 'आस्था' से जब तो मजा आ गया।।4।। मेरे गुप्ति..

आरती नं. 29

(तर्ज–ये परदा हटा दो...)

जगमग दीप जलायें, गुरु की आरती गायें।
आओ गुरुवर की आरती उतारें सभी,
गुरु की आरती उतारें, हम आज सभी...

1. ज्ञान दिवाकर प्रज्ञायोगी, धर्मक्रांति कहलाते।
कविहृदय हे महाकविश्वर, गुप्तिनंदी को ध्याते॥
इनकी आरती गायें, इनको शीश झुकायें,
गुरु की आरती उतारें, हम आज सभी...

2. आर्षमार्ग का दीप जलाते, प्रज्ञा सूत्र सिखाते।
भक्तों में भक्ति की किरणें, सूरज बन चमकाते॥
गुरु के चरणों में आये, इनकी भक्ति रचायें,
गुरु की आरती उतारें, हम आज सभी...

3. हे वात्सल्य सिंधु पदधारी, भक्त तेरे नर–नारी।
तेरी आरती करके गुरुवर, मिलता आनंद भारी॥
अपनी 'आस्था' जगायें, गुरु का आशीष पायें,
गुरु की आरती उतारें, हम आज सभी...

आरती नं. 30

(तर्ज – आरती करूँ चौबीस..)

आरती करूँ श्री गुप्तिगुरुंची।
आरती करूँ या या।

आरती करूँ वात्सल्य सिंधु ची।
आरती करूँ या या।

करूँ या नमन कविहृदयांचे-2
जोड़ुनी मुकलित हाथ-2,
आरती करूँ या या।
आरती करूँ श्री गुप्तिगुरुंची।
आरती करूँ या या॥1॥

धर्मतीर्थ हे सुन्दर तीर्थ-2
दिली प्रेरणा गुरुतात-2,
आरती करूँ या या।
आरती करूँ श्री गुप्तिगुरुंची।
आरती करूँ या या॥2॥

गुप्ति गुरु महा अतिशयकारी-2
सर्वसुखकारी सर्वहितकारी-2,
'विनय' होतो नतभाल,
आरती करूँ या या।
आरती करूँ श्री गुप्तिगुरुंची।
आरती करूँ या या॥3॥

***

(4) वात्सल्य मूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी की आरती-1

(तर्ज : माईन माईन...)

माताजी की आरती कर लो अवसर शुभ है आया।
सम्यग्दर्शन की निधि पाने मैं चरणों में आया।।
माता हो हो अम्बे ओ ओ...

माताजी की सुंदर मूरत सब जन को हर्षाये,
एक बार जो दर्शन कर ले बार-बार ललचाये।
रायपुर में जन्म लिया तव मात-पिता सुख पाये,
मनमोहक कन्या को पाकर सब जन मंगल गाये।। माता हो...

मोह तिमिर को दूर भगाकर आतम ज्योति जगायें,
मुक्तिपुरी की राही बनकर सम्यक् पथ अपनायें।
जगदम्बे की आरती करने हम सब मिलकर आयें,
हाथों में दीपों की थाली लेकर नाचे गायें।। माता हो...

करुणाधारी माता ने हम सबको यहाँ बुलाया,
प्रीत रखो सब ही प्राणी से यह संदेश सुनाया।
माताजी की शरणा पाकर मिटता भव का फेरा,
रागद्वेष भी कम हो जाता छूटे तेरा-मेरा।। माता हो...

क्रांति करने मात चली जो धर्म की राह बताये,
डूब गये जो भौतिकता में उनको सुजन बनाये।
इनके जीवन से शिक्षा लो जीवन सुखी बनाओ,
'क्षमा' शरण में आयी माता मुझको पार लगाओ।। माता हो...

आरती–2

(तर्ज : रिम झिम बरसता...)

चम–चम चमकते दीपक लाये।
राजश्री माता की आरती गाये।।
ढ़ोल–मंजीरा–ढ़पली बजाये.....राजश्री

जन्म लिया माँ ने रायपुर नगर में।
कदम बढ़ाया मोक्ष डगर पे।।
रत्नों की थाली ले भक्ति रचायें।
राजश्री माता.....।।

धैर्य–क्षमा–समता धारी माता।
वात्सल्य करूणा ज्ञान की दाता।।
ज्ञान की ज्योति पाने दीपक जलायें।
राजश्री माता.....।।

गुण हैं अनेकों माँ के कैसे मैं गाऊँ।
तेरे गुणों की कीर्ति जग में फैलाऊँ।।
झांझर और घुंघरु ले के द्वार पे आये।
राजश्री माता.....।।

नील गगन में जैसे चमके सितारा।
राजश्री माता ने हम सबको तारा।।
'आस्थाश्री' माता की रजकण पाये।
राजश्री माता की आरती गाये।।
राजश्री माता.....।।

(5) जिनशासन भक्त धरणेन्द्र देव की आरती

(तर्ज : म्हारा हिवड़ा में ...)

हम आरती गायें आज, ततथइया थइया।
सब मिलके बजाओ साज, ढोलक बांसुरिया।
समोशरण के शासन देवा पद्मावती के सैंया...हम आरती...

तुम पार्श्वप्रभु के रक्षक हो, धरणेन्द्र देव उपकारी हो–होऽऽ तुम...
कच्छप आसन पर शोभ रहे, तुम चार भुजा के धारी हो।
तेरे चरणों में हम आये, पाने तेरी छैया–हम आरती....

नवकार सुना पारस प्रभु से, पारस प्रभु के सेवक बनने। होऽऽ नवकार..
उपकार मान पारस प्रभु का, उपसर्ग मिटाया था तुमने।
फण फैलाया था तुमने और हर्षे पद्मा मैया–हम आरती...

जिन भक्तों की रक्षा करते, दुःखियों के दुःख हर लेते हो। होऽऽजिन...
करुणासागर धरणेन्द्र देव, इच्छा पूरी कर देते हो।
थाल सजाकर तुम्हे चढ़ायें, 'अम्मु' खीर सिवैया–हम आरती...

(6) श्री क्षेत्रपाल की आरती नं. 1

(तर्ज–जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा)

क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल राजा।
आरती करें तिहारी हम बजा के बाजा॥
क्षेत्रपाल देव को, जिनदेव प्यारे।
हमको इसलिए ही, क्षेत्रपाल देव प्यारे॥
आप उनके भक्त जो भवोदधि जिहाजा। आरती....

एक हाथ में त्रिशूल, दूजे में भाला।
तीजे में डमरू और, चौथा फूल वाला॥
अस्त्र–शस्त्र धरते धर्म रक्षा के काजा। आरती....

सम्यक्त्ववान आप भक्तों के त्राता।
दीनों को सुख व निर्धनों को धन प्रदाता॥
आपकी कृपा का छत्र भक्त पे विराजा। आरती....

दुर्जन सुधार आप सज्जन को तारे।
जिनधर्मी जन के देव आप ही सहारे॥
पापी को कहते पाप मार्ग में तू ना जा। आरती....

डाकिन पिशाचिन व भूत-प्रेत बाधा।
बाबा प्रसन्न हो तो हो नहीं ये बाधा॥
भक्त 'कपिल' के हो आप प्राणप्रिय राजा। आरती....

आरती नं. 2

(तर्ज-घुंघरु छम छमा...)

घुंघरु छमछमा छम छन छन नन बाजे रे-2
क्षेत्रपाल जी आरती मैं, मेरा मनवा नाचे रे॥
सब तीर्थों पे जिन मंदिर में, क्षेत्रपाल जी राजे।
धर्मतीर्थ में क्षेत्रपाल दर, ढ़ोल नगाड़ा बाजे॥1॥
क्षेत्रपाल क्षेत्रों के रक्षक, विजय आदि अपराजित।
रक्षक बनकर रक्षा करते, जिसमें आप विराजित॥2॥
तेल चना सिंदूर उड़द गुड़, वस्त्र जनेऊ लाये।
मोदक भूषण पुष्प पान ले, सुन्दर द्रव्य चढ़ायें॥3॥
तुम भी हो जिनवर के सेवक, प्रभु की पूजा करते।
मुनिराजों की जिनभक्तों की, सेवा में नित रहते॥4॥
पाव में पायल हाथ में मुदगर, गले में मोती माला।
कान में कुण्डल किरीट शिर पे, मन को हरने वाला॥5॥
क्षेत्रपाल सब सम्यक्दृष्टि, सबके कष्ट मिटायें।
सम्यक्दर्शन के वर्धनहित, 'आस्था' से हम ध्यायें॥6॥

(7) धर्मतीर्थ के यक्ष–यक्षिणी की आरती

(तर्ज – माईन माईन...)

चौबीस जिन के यक्ष यक्षिणी धर्म प्रभाव बढ़ायें।
घृत कपूर का दीपक ले हम, आरती करने आये॥
बोलो यक्ष–यक्षी की जय–2...॥ घृत...॥

कुसुम श्याम कुमार यक्ष ये, सेवक सब जिनवर के।
गरुड व गोमुख, विजय, वरुण भी, यक्ष हैं ये प्रभुवर के॥
श्री सर्वाण्ह यक्ष धरणेन्द्र–2, सम्यग्दृष्टि कहाये..।
धर्मतीर्थ पर यक्ष–यक्षिणी, प्रभु के साथ बिठाये॥1॥
बोलो यक्ष–यक्षी की जय–2...॥ घृत...॥

शासन देवी है मनोवेगा, ज्वाला मालिनी माता।
गांधारी और महामानसी, चक्रेश्वरी महामाता॥
श्री महाकाली बहुरूपिणी–2, कुष्मांडी मनभाये।
पद्मावती व सर्व देवियाँ, सबके कष्ट मिटायें॥2॥
बोलो यक्ष–यक्षी की जय–2...॥ घृत...॥

विजय वीर मणिभद्र व भैरव, अपराजित यक्षेश्वर।
घंटाकर्ण आदि यक्षों के, जिन प्रभु हैं परमेश्वर॥
क्षेत्रपाल व यक्ष–यक्षिणी–2, समवशरण में जायें।
श्रद्धा से सम्मान करो नित, जिन आगम बतलाये॥3॥
बोलो यक्ष–यक्षी की जय–2...॥ घृत...॥

(8) माँ पद्मावती की आरती नं. 1

(तर्ज : इंजन की सीटी...)

भक्तों आओ रे-2 पद्मावती माँ की आरती बोले-2
ढ़ोल मंजीरों के संग मेरा मन डोले-2

पार्श्वप्रभु की चरण सेविका-2, श्री धरणेन्द्र प्रिया हो।
संकट दूर किये जिसने भी, तेरा ध्यान किया हो।। भक्तों...

पार्श्व प्रभु के उपसर्गों का-2, नाश किया था तुमने।
मेरे उपसर्गों का क्षय हो, शीश झुकाया हमने।। भक्तों...

भक्तों की तुम भाग्य विधाता-2, दुखियों की दु:खहारी।
दो आशीष तुम्हारा हमको, आये शरण तिहारी ।। भक्तों...

मुक्तिमार्ग से प्रीत मुझे है-2, रक्षा करो हमारी।
कर्मों से संघर्ष करूँ मैं, शक्ति दो मनहारी।। भक्तों...

भवनलोक में तेरी कीर्ति-2, है यशगान तुम्हारा।
'कपिल' तुम्हारी गाथा का माँ, कर न सके विस्तारा।। भक्तों...

आरती नं. 2

(तर्ज - माईन-माईन....)

पार्श्व प्रभु की यक्षी माँ तू, सबके कष्ट मिटाये।
भैरव पद्मावती माता की, आरती हम सब गायें।।
बोलो पद्मावती की जय, बोलो अंबे माँ की जय...

क्षेत्र आपके मात बहुत से, हुमचा दिल्ली काशी।
धर्मतीर्थ में तुमको पूजें, नर-नारी वनवासी॥
नागयक्ष की आप प्रिया हो-2, भुवन लोक चमकाये। भैरव..
बोलो पद्मावती की जय...॥1॥

गुप्ति गुरु ने धर्मतीर्थ पे, तुमको मात बिठाया।
अष्ट धातु में चौबीस बाहु, रूप तेरा मन भाया॥
गोद भरें श्रृंगार कराये-2, तुमको हम सब ध्यायें। भैरव..
बोलो पद्मावती की जय....॥2॥

नवरात्रि वा शुक्रवार या, पर्व बड़े जब आयें।
तब दरबार लगा माँ तेरा, भक्ति नृत्य रचायें॥
'आस्था' भाव सहित हर प्राणी-2, तेरे दर पर आये। भैरव..
बोलो पद्मावती की जय....॥3॥

***